फ़ज़ाइले
शैख़ैन

हज़रत
अबू बक्र सिद्दीक़
और
हज़रत उमर फ़ारुक़
रदीअल्लाहु अन्हुमा के
फ़ज़ाइल

रद्दे शिया



40+40
अहादीस

मुसन्निफ़ :
इमाम जलालुद्दीन सुयूती ﷺ

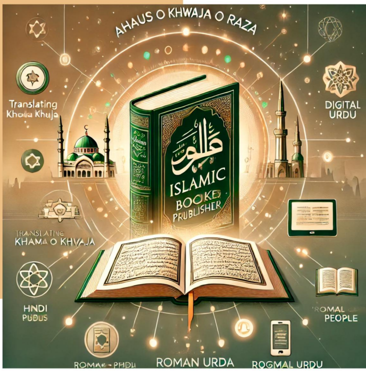
मुतर्जिम :
सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी

GKR Digital PUBLISHER

GKR Digital PUBLISHER

About Publisher

GKR (Ghaus o Khwaja o Raza) Digital Publisher ek Sunni Islamic digital publishing platform hai jo Islami kitaabon aur taleemaat ko nayi soch aur updated andaz me logon tak pahuchane ka kaam karta hai. Yah platform khas kar Islami kitaabon ko **Hindi aur Roman** script me translate karta hai, taaki ilm-e-deen (Islamic knowledge) ko aam logon aur khaas tabqe (awam aur khwas) tak asaan aur samajhne layak format me pesh kiya ja sake.





Join Team Member

Agar aap GKR ke saath judna chahte hain ya is platform ke zariye koi kitaab Translate/publish karana chahte hain, to yah ek behtareen moka hai ilm-e-deen ko doosron tak pahunchaane ka.

Founder :

Writer | Translator | Creator | Designer | Composer

Sufi Anwar Raza Khan Qadri

9534124663 (GP/Phone)

(Mureede Tajush Sharia)

Ba Faize Roohani Huzoor Khawaja Garib Nawaz

www.ghausokhwajaorazatrust.com

Donate to Islam

Anwar Khan

Indian Bank 8894

किताब नाम	:	"***फ़ज़ाइल-ए-शैख़ैन***"
मुसन्निफ़	:	**इमाम जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमा**
भाषाः	:	हिन्दी
मुतर्जिम	:	सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी
कैटेगरी	:	अक़ाइद
कंपोज़िंग और डिज़ाइनिंगः	:	सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी
PDF	:	GKR Digital Publisher
साल	:	**जुलाई** 2025 (**मुहर्रम** 1447 हिजरी)
पेज	:	60

हम्द व सना

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए

- जो 1 माबूदे हक़ीक़ी है । उसका कोई शरीक नहीं, न ज़ात में, न सिफ़ात में, न अफ़आल (काम) में, न अहकाम में, न अस्मा में
- जिसने अपनी क़ुदरत से हमे तमाम मख़्लूक में सबसे अफ़ज़ल यानी इंसान बनाया
- जिसने अपने फ़ज़्लों करम से हमे तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल अपने हबीब का उम्मती यानी मुसलमान बनाया
- जिसने अपने रहमो करम से हमे इस उम्मत के सवाद ए आज़म में से यानी सुन्नी बनाया।
- जिसने दौर के मुताबिक अपने वली हुज़ूर आला हज़रत के जरिये हमे सुन्नियों में अफज़ल यानी बरैलवी बनाया।
- तमाम तारीफें उस ज़ात के लिए है जिसके लिए हम बरैलवी हक़ वालों से महब्बत और बातिल फ़िरकों से नफ़रत करते है।
- दरूद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनहगार उम्मतियों का नबी बनाया व सलामती हो असहाब पर और नबी के आल पर और सलामती हो उन तमाम मोमिनीन व मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किया।

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

फ़ज़ाएल-ए-उमर (40 अहादीस)

पेश लफ़्ज़

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला सैय्यिदिल अंबिया-इ वल-मुरसलीन अम्मा बअ्द!

ज़ेर-ए नज़र किताब **फ़ज़ाइल-ए-शैख़ैन** रदीअल्लाहु अन्हुमा दर असल इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़िई अलैहिर्रहमा (मुतवफ़्फ़ी 911 हिज्री) के दो रिसालों **अर-रौदुल अनीक फ़ी फ़ज़्लिस सिद्दीक़** और **अल-ग़ुरर फ़ी फ़ज़ाइल उमर** रदीअल्लाहु अन्हु का उर्दू तर्जुमा मआ तख़रीज-ए अहादीस है। तक़्दीम में शैख़ैन करीमैन सैय्यिदुना अबू बक्र अस-सिद्दीक़ रदीअल्लाहु अन्हु ता सैय्यिदुना उमर इब्ने अल-ख़त्ताब रदीअल्लाहु अन्हु के मुख़्तसर हालात बयान करने की सआदत हासिल हुई, साथ ही साथ मुसन्निफ़-ए किताब सैय्यिदी इमाम जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमा के मुख़्तसर हालात भी रक़म किए हैं।

दोनों रिसालों के हिन्दी तराजिम के नीचे हवाले के साथ अहादीस की तख़रीज भी लिखी गई है,

अल्लाह त'आला की बरगाह-ए अक़्दस में दुआ है कि शैख़ैन **रिदवानुल्लाहि त'आला अलैहिम अजमा'ईन की ख़िदमत-ए अक़्दस में जो नज़राना पेश कर रहा हूँ, उसे अपने महबूब** अलैहिस्सलातु वस्सलाम **के सदक़ा-ओ-तुफ़ैल क़ुबूल फ़रमाए। उसे बिल-ख़ुसूस मेरे, मेरी वालिदैन, मेरे शैख़-ए तरीक़त और मेरे तमाम असातिज़ा-ओ-मुतअल्लिक़ीन और बिल-उमूम तमाम सच्चे मुसलमानों के हक़ में ज़रीआ-ए बख़्शिश-ओ-निजात बनाए।**

आमीन बिजाहि सैय्यिदिल अंबिया-इ वल-मुरसलीन सल्लल्लाहु त'आला अलैहि व सल्लम

मुहम्मद फ़रहान क़ादरी
(उर्दू मुतर्जिम)

अर्ज़-ए-मुतर्जिम

अल्हम्दुलिल्लाह! रब्ब-उल-आलमीन का शुक्र अदा करते हुए इस किताब के हवाले से कुछ गुज़ारिशात पेश-ख़िदमत हैं। इस किताब की हिन्दी तर्जुमा करने का मक़सद मौजूदा दौर में लोगों को हक़ और सच्चाई की रोशनी दिखाना और धोखादेही व गुमराही से बचाना है।

आज के दौर में (2025 ई. / 1447 हिजरी), उम्मत-ए-मुस्लिमा को जिन बुनियादी फ़ितनों का सामना है, उनमें से एक **सहाबा इकराम** रदीअल्लाहु अन्हुमा की शान में गुस्ताख़ी का फ़ितना है, जो अक्सर **राफ़ज़ी शियों**, **मौलाई गिरोहों** और दुसरे गुमराह फ़िरकों के ज़रिए फैलाया जा रहा है। यह फ़ितना सिर्फ अक़ीदे में खराबियाँ पैदा करने ही की नहीं, बल्कि उम्मत की **वहदत (एकता)** को तोड़ने की एक कोशिश भी है। इन हालात में हक़ और बातिल के दरमियान फ़र्क़ वाज़ेह करना तमाम औल्माए हक़ (बरैलवियों)का फ़र्ज़ बनता है।

यह किताब इस नियत से आपकी ख़िदमत में पेश की गई है कि लोग बातिल फ़िरको के कुफ्री अक़ाइद से वाकिफ हो सकें और अपने ईमान व अक़ाइद को महफूज रख सकें। कोशिश की गई है कि बात को आसान और आम फ़हम अंदाज़ में पेश किया जाए ताकि हर शख़्स इससे इस्तिफ़ादा कर सके।

दुआएँ और उम्मीदें:

मेरी दुआ है कि यह किताब क़ारिओं के दिलों में हक़ को समझने की रोशनी पैदा करे और उनके लिए अकीदह-ए-सहीहा की तरफ़ रहनुमाई का ज़रिया बने। अल्लाह त'आला से दुआ है कि इस काम को क़ुबूल फ़रमाए और इसे मेरे लिए और क़ारीइन के लिए ज़रिया-ए-निजात बनाए।

अर्ज़-ए-ख़ास:

क़ारीइन से दरख़्वास्त है कि अगर इस किताब में किसी भी क़िस्म की ग़लती नज़र आए तो मुझे आगाह करें ताकि आइंदा इसकी इस्लाह की जा सके। हर नसीहत और मशवरा मेरे लिए बाइस-ए-रहनुमाई होगा।

वस्सलाम,

मुतर्जिम
सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ान क़ादरी
(मुरीद-ए-ताजुश्शरीआ)
Writer | Translator | Creator | Designer | Composer
राँची, झारखण्ड (इण्डिया)
बानी : ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट

फ़ितनों के इल्म की अहमियत

जानना चाहिए अहले सुन्नत व जमाअत के मुक़ाबले में इस्लाम की शुरुआत से ही कई बातिल फ़िरके अपना सर उठाते रहे और भोली भाली उम्मत ए मुस्लिमा को अपने जाल में फंसाने का काम खूब अच्छे से अंजाम देते रहे, ख़ारजी, राफ्ज़ी, मोताज़िला से लेकर वहाबी देओबंदी तक कई बातिल फ़िरक़ों ने मुस्लिम उम्मत के बहुत से लोगों को बिदअत और गुमराही और कुफ्र में डालकर उनके ईमान और अक़ीदे को बर्बाद कर दिया लेकिन जहाँ मक्कार और बातिल परस्त लोग हैं वहीं खुदा तआला उन के मुक़ाबले में अहले हक़ को पैदा फरमाता है और वो हक़ बयान करने वाले आलिम, बतिलों का रद्द करते हैं और उनकी गुमराहियों से पर्दा हटाते हैं और उम्मत ए मुस्लिमा को उन भेड़िया नुमा इंसानों से बचाकर सीधी और सच्ची राह दिखाकर रहनुमाई करते हैं।

फ़ितनों का इल्म होगा तब ही ईमान बचेगा

हदीस: हज़रत हुज़ैफा बिन अली रदीअल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि नबीए अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अंधेरी रात के सायों की तरह पै दर पै (एक के बाद एक) फितने बरपा होंगे वह तुम पर गाय के चेहरों की तरह बाहम मिलते जुलते होंगे मालूम ना होगा कि कौन सा कितना किन फितनों में से हैं फ़ितना गायों की रेवड़ (झुंड) की तरह तुम पर आएंगे उनमे अक्सर लोग हलाक हो जाएंगे सिवाय उनके जिन्हें उन फितनों के बारे में पहले से इल्म होगा। (किताबुल फितन)

फितनों के दौर में क्या करें

हदीस: हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफा बिन यमान फरमाते हैं: जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम ने अपने बा'द इस्तिलाफ और फिरकों की खबर दी तो मैं ने अर्ज़ की: "यारसूलल्लाह अगर मैं वोह जमाना पाऊं तो आप मुझे क्या नसीहत फरमाते हैं ?" तो आपने इरशाद फरमाया: "कुरआने पाक की तालीम हासिल करो और उस के मज़ामीन पर अमल करो कि इस से निकलने का यही रास्ता है।" हज़रते सय्यदुना हुज़ैफा फरमाते हैं: मैं ने तीन मर्तबा यही सुवाल किया तो आपने तीनों बार यही जवाब इरशाद फ़रमाया कि "कुरआने पाक की तालीम

हासिल करो और इस के मजामीन पर अमल करो कि इसी में नजात है। (अबु दाऊद, हदीस 4246)

इख़्तिलाफ के दौर में क्या करें ?

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमरो رضي الله عنه नबीए अकरम ﷺ का यह फ़रमान नक़ल करते हैं कि उस ज़माने में तुम्हारा क्या हाल होगा जो अनकरीब सामने आएगा जिसमें अच्छे लोग रुखसत हो जाएंगे और नाकारा (नालायक) लोग बाकी रह जाएंगे उनके वादे और उनके अमानत सब फसाद का शिकार हो जाएंगे, वोह एक दूसरे के साथ इख़्तिलाफ करेंगे और वोह इस तरह हो जाएंगे नबीए अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी उंगलियाँ एक दूसरे में पेवस्त करके इशारा फ़रमाया, लोगों ने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आखिर उस वक्त हमें क्या करना चाहिए जब यह सूरत सामने आए नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिस चीज को तुम नेकी समझो उसे इख्तियार करो और जिसे तुम गुनाह समझो उसे तर्क करो, अपने खास **(परहेज़गार)** लोगों की तरफ मतवज्जो हो जाओ आम लोगों को छोड़ दो। (इब्ने माजा, हदीस न. 3957)

इल्म वाले ही परहेज़गार होंगे

अल्लाह फ़रमाता है: (तर्जमा) अल्लाह से वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं। (सूरह फातिर, आयत न 28)

यानी परहेज़गार वही है जो ज़ाहिरी और बातिनी दोनों इल्म रखते है।

परहेज़गार लोग ही हिदायत पाएंगे

अल्लाह फ़रमाता है: (तर्जमा) : वह बुलन्द रूत्बा किताब (कुरान) कोई शक की जगह नहीं इसमें हिदायत है डर वालों को (यानी परहेज़गारों को) (सूरह बकरह, आयत न 2)

दूसरी जगह अल्लाह फ़रमाता है: (तर्जमा) बेशक वो जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी खयाल (वसवसों) की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक्त उनकी आँखें खुल जाती हैं।। (सूरह आराफ, आयत न 201)

अहले सुन्नत व जमात ही जन्नती फिरका है

हजरते इब्ने उमर रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बनी इस्राईल 72 मज़हबो में बट गए थे और मेरी उम्मत 73 मज़हबो में बट जाएगी उनमें एक मजहब वालों के सिवा बाकी तमाम मज़ाहिब वाले नारी और जहन्नमी होंगे सहाबा ए किराम ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वोह एक मजहब वाले कौन है तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि वह लोग इसी मज़हबो मिल्लत पर कायम रहेंगे जिस पर मैं हूँ और मेरे सहाबा हैं (तिर्मिजी, हदीस नं 171, अबू दाऊद, हदीस नं 4579, इब्ने माजा, सफह 287)

बरेलवियों में सहाबीयों वाली सिफत - **कुरआन में अल्लाह त'आला का फ़रमान है तर्जुमा कंज़ुल ईमान : मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उनके साथ वाले यानी सहाबा काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल। (सूरह फत्ह, आयत नं. 29)**

अल्हमदुलिल्लाह आज सच्चे बरेलवी आला हज़रत और हुज़ूर ताजुश्शरीअह के मानने वाले भी हक़ अक़ायद को बातिल अक़ायद से नहीं मिलाते अगरचे आमाल मे खराबी हो लेकिन वोह 72 फ़िर्क़े जो कुफ़रिया अक़ायद के बिना पर जहन्नही है उनसे हमारा कोई दिली तअल्लूक, मुहब्बत, निस्बत, सोहबत, अक़ीदत नही न ही मेल जोल न ही दोस्ती यारी न ही रिस्तेदारी। इन काफ़िरो के साथ हम सख्ती का बरताव करते है और हमेशा इनका तहरीरी और तक़रीरी रद्द करते हैं और करते रहेंगे।

72 (जहन्नमी) फ़िरक़ों के अक़ायदे बातिला

अहले सुन्नत व जमात के अलावा जितने फिर्के हैं उनमें अक्सर के अकाइद कुफ़रिया हैं और कुछ के गुमराही वाले हैं। उन्होंने अल्लाह के महबूब बंदों की शान में तौहीन की, गालियां दी जो सबसे बड़ा जुर्म है। पहला खारिजी फिरका जिसके मानने वाले हज़रते अली रदीअल्लाहु अन्हु को हक पर नहीं मानते हैं और उनकी शान में गुस्ताखियां करते हैं, दुसरा राफजी (शिया) फिरका जो हज़रते अली रदीअल्लाहु अन्हु को बरहक तो मानते हैं मगर आपकी शान में गुलू करते थे और हज़रते अबू बक्र और हज़रते उमर रदीअल्लाहु तआला अन्हुमा की शान में गुस्ताखियां करते हैं। नज्द से फैलने वाला फ़ितना और उसकी शाखें यानी वहाबी, देब बंदी, जमाते इस्लामी, अहले हदीस, तब्लीगी जमात, क़ादीयानी वगैरह तमाम फ़िरक़ों के बानी और अकाबिर मौलवियों ने हक़ के ख़िलाफ अक़ायद रखकर मुरतद व मुनाफिके एतेकादी बना।

अहले सुन्नत की तर्जुमान मस्लके आला हज़रत है

(Maslake Aala Hazrat is Latest form of Ahle Sunnat Wa Jamat)

आज के दौर में मस्लके अहले सुन्नत की वाजेह शिनाख्त और पहचान ''मस्लके आला हज़रत'' है, जिसका इस्तेमाल गुस्ताख़ाने रसूल व फिरकहाए बातिला से इम्तियाज़ के लिऐ होता है। 14वीं सदी हिजरी में जब फिरकहाए बातिला के पैरोकारों ने कुरआन व हदीस की गलत तर्जुमानी की, रसूले अकरम की शाने अकदस में खुली गुस्ताखियां की, ज़रूरयाते दीन से इंकार किया तो सैय्यदना आला हज़रत ईमाम अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत फाजिले बरेलवी रदीअल्लाहु त'आला अन्हु ने जिहाद बिल कलम फ़रमा कर उन दुश्मनाने रसूल की सरकूबी फ़रमाई और अहले सुन्नत व मस्लके आला हज़रत की हिफाजत का बे मिसाल कारनामा अंजाम दिया। यहां तक कि आप का नाम सुन्नी और देवबंदी यूंही और फिरकहाए बातिला के बीच वजहें इम्तियाज़ (फर्क) बन गया। यही वजह है की मौजूदा दौर के ज़माने में मस्लक की निस्बत आला हज़रत की तरफ की जाती है और मस्लके आला हज़रत बोला और लिखा जाता है और कभी एक ही चीज़ के चन्द नाम होते हैं। मस्लन खुद अहले सुन्नत के मुतअद्दिद नाम हैं (मस्लके आला हज़रत) और "मस्लके सवादे आज़म" है तो इस तरह आज के ज़माने में मस्लके अहले सुन्नत व जमात से इसारा होता है,जैसे मूसा अलैहिस्सलाम का लफ़्ज़ हकपरस्त से, फिरऔन का लफ्ज़ बातिलपरस्त से, इसारा होता है। यही वजह है कि आज यह लफ़्ज़ आला हज़रत अहले सुन्नत की पहचान बन चुका है। अगर कोई शख़्स अकीदत से आला हज़रत बोलता है तो सुनने वाले बिला तअम्मुल उसे सुन्नी बरेलवी यकीन कर लेते हैं और लोग समझ जाते हैं कि यह अहले सुन्नत से है और यह उर्फे शरअन महबूब व मकबूल है और हदीस शरीफ में है, जिस काम को मुसलमान अच्छा जानें, वो अल्लाह के नज़दीक भी अच्छा है।

" अल-हासिल आला हज़रत की जात उन बेशबहा दीनी .खिदमात खुसूसन अहकाके हक़ और इबताले बातिल के बाइस सुन्नियत की शिनाख़्त है। इसी लिए उसके हम मस्लक होने का मानी है, सुन्नी होना और मस्लके आला हज़रत का मानी है, मस्लके अहले सुन्नत व जमात लेहाजा हमारे दयार और हिन्द व पाक के अकसर शहरों और इलाकों में मस्लके अहले सुन्नत की पहचान मस्लके आला हज़रत है। ना कि मस्लके आला हज़रत कोई नया या मस्लके अइम्मए अरबआ से अलग कोई पाँचवां मस्लक है।

अज़ : मौलाना मुहम्मद तहसीन रजा कादरी, गंगाघाट, यू.पी.

रज़वी /बरेलवी ही हक़ जमाअत है

एक जमाअत हमेशा हक़ पर रहेगी - हज़रत सौबान रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु त'आला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हमेशा मेरी उम्मत में से एक जमाअत हक़ पर रहेगी जो ग़ालिब रहेगी और उनके मुखालेफीन उनको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकेंगें| यहाँ तक कि क़यामत आ जायेगी । (मिश्कात जिल्द 2 सफा 465 बाहवाला जवाहिरुल हदीस हिन्दी, 131)

हक़ जमात की अलामत - अल्लाह कुरआन में फरमाता है (तर्जुमा) : ''तुम न पाओगे उन (वैसे) लोगों को जो यक़ीन (ईमान) रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती (इत्तेहाद) करें उनसे (वैसो से) जिन्हों ने अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालिफ़त की, अगरचे वो उनके बाप या बेटे या भाई या कुंबे (रिस्तेदार) वाले हों ये (लोग) हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उनकी मदद की और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बहें उनमें हमेशा रहें, अल्लाह उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी **यह अल्लाह की जमाअत** है सुनता है अल्लाह ही की जमाअत कामयाब है''| (सूरह मुजादिला, आयत 22)

इस दौर में वो जमाअत बरेलवी ही हैं - बिला शुबा इस दौर में वो जमात मस्लके आला हज़रत के मुताबिक चलने वाली तहरीक, तंजीम, खानकाह, मदारिस यानी रज़वी /बरेलवी है| इसलिए शारेह बुखारी हज़रत मुफ्ती शरीफउल हक़ अमजदी अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया '' अगर रज़वी ना हो तो किसी खाऩक़ाह का वजूद बाकी न रहेगा, रज़वियों ही की ललका़र से देवबंदियत लरज़ती है और सुन्नियत पनपती है|

इस दौर में देखा सकता है कि बरेलवी सख्ती के साथ बातिल फिरकों जैसे खारजी, राफजी, कादियानी, वहाबी, देवबंदी, अहले हदीस, अहले कुरआन, जमाते इस्लामी वगैरह का रद्द करते आए वही ग़ैर बरेलवी खामोशी या इत्तेहाद के नारे लगाते है और सुलहकुल्लियत जैसे फ़ित्ने को जन्म दे रहे है|

बरेलवियों में सहाबीयों वाली सिफत - कुरआन में अल्लाह त'आला का फ़रमान है तर्जुमा कंजुल ईमान : मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उनके साथ वाले यानी सहाबा काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल | (सूरह फत्ह, आयत नं. 29)

सच्चे मुहिब और मोमिन बरेलवी ही हैं - ईमामे रब्बानी मुजदिदे अल्फ़ेसानी शैख़ अहमद सरहिन्दी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है : ''जब तक ख़ुदा और रसूल के दुश्मनों के साथ दुश्मनी ना रखी जाए, उस वक़्त तक ख़ुदा और रसूल के साथ महब्बत नहीं हो सकती| (जि.1, मक्तूब-266)''

कुरआन में सहाबा के फ़ज़ाइल

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में सहाबा इकराम (रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन) की अज़मत, ईमान और कुर्बानियों को वाजेह तौर पर बयान किया है। ये आयतें उनके बुलंद मक़ाम और अहमियत को साबित करती हैं।

सारे सहाबी जन्नती

आयत 1 : कुरआन में अल्लाह त'आला फ़रमाता है (तर्जमा) : **वो (असहाब) जिन्हों ने फतहे मक्का से पहले ख़र्च और जिहाद किया वो मर्तबे में उनसे बड़े हैं जिन्होंने फतह के बाद ख़र्च और जिहाद किया और उन सबसे (*असहाब* से) अल्लाह जन्नत का वादा फ़रमा चुका है।** (कंज़ुल ईमान, सुरह हदीद, आयत नं 10)

अल्लाह असहाब से राज़ी

आयत 2 : कुरआन में अल्लाह त'आला फ़रमाता है (तर्जमा) : **सब मे अगले पहले मुहाजिर और अन्सार और जो भलाई के साथ उनके पैरो हुए अल्लाह उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी।** (कंज़ुल ईमान, सुरह तौबा, आयत नं 100)

आयत 3 : कुरआन में अल्लाह त'आला फ़रमाता है (तर्जमा) : **बेशक अल्लाह राज़ी हुआ ईमान वालों (*असहाब*) से जब वो उस पेड़ के नीचे तुम्हारी (नबी ﷺ की) बैअत करते थे।** (कंज़ुल ईमान, सूरह अल-फ़त्ह, आयत नं. 18)

असहाब पर अल्लाह की रहमतें

आयत 4 : कुरआन में अल्लाह त'आला फ़रमाता है (तर्जमा) : बेशक अल्लाह की रहमतें मुतवज्जह हुई उस नबी पर और उन मुहाजिरीन और अन्सार पर जिन्होंने मुश्किल की घड़ी में उनका (हुज़ूर ﷺ का) साथ दिया। (कंज़ुल ईमान, सूरह तौबा , आयत नं. 117)

किसी सहाबी को बुरा न कहो

सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इरशाद है: तुम मेरे सहाबा को गाली न दो और न बुरा भला कहो। इस लिये कि तुम से अगर कोई उहद पहाड़ के बराबर सोना खर्च करे तो वह उनके किलो और आधा किलो गेहूं और जौ खर्च करने के बराबर नहीं हो सकता। (बुखारी, मुस्लिम, मिश्कात: 553)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सलम ने फ़रमाया : जिस ने मेरे सहाबा को गाली दी और उन्हें बुरा भला कहा, उस पर अल्लाह तआला, तमाम फिरिश्तों और तमाम इंसानों की लअनत है।

शरह : इस हदीस शरीफ की शरह में इमाम मनावी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि यह हुक्म उन सहाबा को भी शामिल है जो कत्लो-किताल में शामिल हुए इस लिये कि वह उन लड़ाइयों में मुज्तहिद और तावील करने वाले हैं, लिहाज़ा उन्हें गाली देना गुनाहे कबीरा और उनको गुमराही या कुफ्र की तरफ मन्सूब करना कुफ्र है।(बरकाते आले रसूल: 283) (बाहवाला .खुत्बाते मुहर्रम, पेज 341)

सहाबा को बुरा कहने वाले 2 गिरोह की हलाकतें

हज़रत अली कर्रम अल्लाहु वज्हहु फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सलम ने मुझ से फ़रमाया: "तुम्हें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से एक **मुशाबिहत** है। उन से यहूद ने बुग़्ज़ किया यहाँ तक कि उनकी वालिदा-ए-माजिदा पर ज़िना की तोहमत लगाई, और नसारा उनकी महब्बत में ऐसे हद्द से गुज़रे कि उनकी ख़ुदाई के मुतअक़िद हो गए *(यानी ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा मान लिया।"*

सरकार-ए-मौला-ए-काइनात फरमाते हैं: "होशियार! मेरे हक़ में भी दो गिरोह हलाक होंगे"

हज़रत अली से महब्बत और अदावत

सरकार-ए-मौला-ए-काइनात फरमाते हैं "मेरे मामले में दो क़िस्म के लोग हलाक होंगे: एक महब्बत करने वाला और हद से बढ़ाने वाला *(यानी शिआ और मौलायी फिरका जो अबू बक्र, उमर, उसमान और अमीरे मुआविया को बुरा कहते है),* वह महब्बत उसे ग़ैरे हक़ की तरफ ले जाएगी।

दूसरा बुग़्ज़ रखने वाला हद से कम करने वाला, *(यानी खारजी जो हज़रत अली से बुग्ज रखते है)* वह बुग़्ज़ उसे खिलाफ़-ए-हक़ की तरफ ले जाएगा। और सब से बेहतर हाल मेरे मामले में दरमियानी जमात का है *(यानी जो सहाबा को बुरा भी न कहे और हज़रत अली का मुहिब हो)*। तो इस दरमियानी हालत को अपने लिए ज़रूरी समझो और सवाद-ए-आज़म (बड़ी जमात, अहल-ए-सुन्नत) के साथ वाबस्ता रहो, क्योंकि अल्लाह का हाथ इसी जमात पर है। और ख़बरदार! इस जमात से अलग न होना, क्योंकि जो इंसान जमात से अलग हो गया, वह उसी तरह शैतान का शिकार हो जाएगा, जिस तरह रेवड़ से अलग होने वाली बकरी भेड़िये का शिकार हो जाती है।"(**नहजुल बलाग़ा**)

हज़रत अली ﷺ से महब्बत कब मुफीद

हज़रत अली अल-मुर्तज़ा ﷺ से अक़ीदत व महब्बत तब फ़ायदा देगी, जब हज़रत अली के दोस्तों (सहाबा) से प्यार हो। अगर उनके दोस्तों से बुग़्ज़ व इनाद (शत्रुता) हो, तो फिर न हज़रत अली ﷺ अल-मुर्तज़ा भी मुँह लगाएँगे और न ही नबी करीम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) यानी मुंह फेर लेंगे।

अबू बकर और उमर को बुरा कहने वाला शिआ फिरका

एक *दफ़ा* हुज़ूर ﷺ ने शैतान से पूछा यह बताओ, तेरा हम ख़्वाब कौन है?
शैतान ने जवाब दिया मस्त और नशे वाला !
फ़रमाया ! तेरा मेहमान कौन है? बोला चोर !
आपने फिर पूछा तेरा कासिद कौन है? जवाब दिया जादूगर ! फ़रमाया दोस्त कौन है कहने लगा ! बे नमाज़ी।
आप ने फिर दरयाफ्त किया, तेरा सब से ज़्यादा महबूब दोस्त कौन है?
शैतान ने जवाब दिया, जो अबू बकर और उमर को बुरा कहे।
(नुज़्हतल-मजालिस जि: 2, स:56)

शैख़ैन का गुस्ताख़ सबसे बड़ा फ़सादी:

हज़रत अबुल क़ासिम अब्दुल्लाह बिन अहमद फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत इस्माईल बिन क़ासिम की ज़बानी सुनी कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन सुलेमान ने पूछा: "ऐ इस्माईल! आप हज़रत अबू बक्र व उमर (रदीअल्लाहु अन्हुमा) की शान में गुस्ताख़ी करने वाले के बारे में क्या फ़रमाते हैं?"

मैंने कहा: "उससे तौबा का मुतालबा किया जाएगा। अगर तौबा कर ले तो बेहतर है, वरना उसकी गर्दन मार दी जाएगी।"
उन्होंने कहा: "आप ये बात कहाँ से कह रहे हैं?"
मैंने कहा: "किताबुल्लाह से।"
उन्होंने कहा: "किताबुल्लाह की आयत से?!"
मैंने कहा: "हाँ।"
उन्होंने कहा: "किताबुल्लाह में कहाँ है?"
मैंने कहा: "अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया:
'इन्नमा जज़ाउल्लज़ीना युहारिबूनल्लाहा व रसूलहू व यसऔना फिल-अर्दि फसादन अन युक़त्तलू...'(अल-माइदा: 33)
यानी, 'अल्लाह और रसूल से जंग करने वालों और ज़मीन में फ़साद की कोशिश करने वालों का बदला यही है कि उन्हें क़त्ल कर दिया जाए।'
और ज़मीन में हज़रत अबू बक्र व उमर (रदीअल्लाहु अन्हुमा) की शान में गुस्ताख़ी से बढ़ कर कोई फ़साद नहीं हो सकता।"
यह सुन कर उन्होंने मुझसे कहा:
"ऐ इस्माईल! आपकी बात सही है।"

शिआ मोमिन हो ही नहीं सकता

अबू जुहैफ़ा से रिवायत है कि अली ﵁ ने फ़रमाया किसी मोमिन के दिल में मेरी महब्बत और अबू बक्र-ओ-उमर से नफ़रत जमा नहीं हो सकती।"(किताबुश्शरीआ, अबु बक्र अजूरी)

चार यार की महब्बत ईमान की अलामत:

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है के रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अबू बक्र व उमर, उस्मान व अली इन चारों की महब्बत मोमिन ही के दिल में जमा होगी। (गुस्ताख़े सहाबा का अंजामे बद, पेज 40)

अमीरे मुआविया को बुरा कहने वाला मौलायी फिरका

हज़रत आमिर मुआविया को बुरा कहने वाला "मौलायी फ़िरका" दरअसल वह गिरोह है जो **शिया / राफ़िज़ी सोच** से निकलकर पैदा हुआ, लेकिन खुद को "अहले सुन्नत" जैसा दिखाने की कोशिश करता है। इस फ़िरके को अक्सर "मौलायी" भी कहा जाता है।

अमीरे मुआविया को बुरा कहने का अंजाम

हज़रत अल्लामा शहाबुद्दीन ख़िफाज़ी नसीमुर रियाज़ शरह शिफाए इमाम काज़ी अयाज़ में तहरीर फरमाते हैं कि जो शख्स हज़रत अमीरे मुआविया रदीअल्लाहु तआला अन्हु पर तअन करे वह जहन्नमी कुत्तों से एक कुत्ता है।(अहकामे शरीअतः 1/103)

महब्बते अहले बैयत का लिबादा(बदतरीन लोग)

हज़रत अली फ़रमाते है "यह उम्मत तिहत्तर (73) फ़िरक़ों में तक़सीम हो जाएगी, उनमें बदतरीन वो लोग होंगे जो अहले बैत की महब्बत का दावा करेंगे मगर हमारे आमाल की मुख़ालिफ़त करेंगे।" (हिलयात उल-औलिया, जिल्द 6, किताब अल-फ़ितन)

मुख्तार सक़फ़ी का महब्बते अहले बैत का फ़र्ज़ी दावा

याद रहे अहले बैत से महब्बत हुज़ूर की निस्बत की वज्ह से होना चाहिए और हुज़ूर से महब्बत अल्लाह की रज़ा के लिए होनी चाहिए, यानी अल्लाह तक पहुंचने का ये ज़रिया है, ना कि इस ज़रिए यानी अहले बैत की महब्बत को ही मतलूब, मक्सूद, मअबूद बना लेना है। और असल मकसूद यानी अल्लाह और रसूलुल्लाह की रज़ा हासिल करने के बजाय उसे नाराज़ करना, जैसे कि शिया लोग करते हैं। मुख्तार सक़फ़ी, जो क़ातिलाने इमाम हुसैन को चुन चुन कर मारा था, लेकिन इस अमल के पीछे उसकी नीयत अल्लाह और रसूलुल्लाह की रज़ा हासिल करना नहीं था। अगर होता, तो दावा-ए-नुबूवत नहीं करता और काफिर होकर नहीं मरता। आज भी ऐसे बहुत लोग हैं जो अहले बैत से फर्ज़ी महब्बत के दावेदार हैं और दीन के गद्दार हैं। इस गिरोह में शिया और मौलाई फिरका शामिल हैं।

हासिल-ए-कलाम (निष्कर्ष):

1. हज़रत अली ﷺ से महब्बत तभी सही है जब सभी सहाबा ﷺ से महब्बत हो।
2. सच्ची अहले-बैत की महब्बत सभी सहाबा की ताज़ीम के साथ ही मुमकिन है।
3. सहाबा से बुग्ज़ (बेअदबी) रखना अहले-बैत की महब्बत को ना कामयाब कर देता है।
4. सहाबा ﷺ से बुग्ज़ (बेअदबी) रखने वालों को न पैग़म्बर अलैहिस्सलाम की शफ़ाअत मिलेगी, न ही हज़रत अली ﷺ की।
5. पैग़म्बर अलैहिस्सलाम और हज़रत अली ﷺ दोनों ने मुसलमानों की एकता और सहाबा के महब्बत (ताज़ीम) पर ज़ोर दिया।

यहाँ तक की तहरीर

हिन्दी मुतर्जिम

सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी

की जानिब से थी जिसका इल्म होना

मौजूदा दौर में निहायत ज़रूरी है।

असल किताब

फ़ज़ाइल-ए-शैख़ैन

की शुरूआत इसे पेज के बाद से है

इमाम जलालुद्दीन सुयूती के बारे में

आप का इस्म-ए गिरामी:

अब्दुर रहमान बिन कमाल अबू बक्र बिन मुहम्मद बिन साबिक़ुद्दीन बिन फ़ख़्र उस्मान बिन नाज़िरुद्दीन मुहम्मद बिन सैफ़ुद्दीन ख़िज़्र बिन नजमुद्दीन अबुस सलाह अय्यूब बिन नासिरुद्दीन मुहम्मद बिन शैख़ इमामुद्दीन हुमाम ख़ुदैरी सुयूती और **लक़ब** जलालुद्दीन रखा। आप की विलादत के एक हफ़्ता बाद आप के वालिद ने आप का नाम अब्दुर रहमान रखा।

आप जब अपने शैख़ क़ाज़ी अल-क़ुज़ात इज़्ज़ुद्दीन अहमद बिन इब्राहीम किनानी के पास हाज़िर हुए तो उन्हों ने आप से आप की कुनियत पूछी, तो इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने अर्ज़ की: "मेरी कोई कुनियत नहीं।" तो फ़रमाया: "अबुल फ़ज़्ल।"

आप की पैदाइश:

इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने फ़रमाया: "मैं इतवार की शाम बाद मग़रिब, रजब 839 हिज्री में पैदा हुआ। और मुझे शैख़ मुहम्मद मज्ज़ूब (जो के बहुत बड़े वली थे) के पास ले जाया गया, तो उन्हों ने मेरे लिए बरकत की दुआ फ़रमाई।"

यूँ ही इमाम साहिब ने फ़रमाया: "मेरी तालीमी मरहला की इब्तिदा यतीमी की हालत में हुई। फिर मैं ने क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ किया, फिर (इब्ने दक़ीक़ अल-ईद की) शर्ह उम्दत अल-अहकाम, (इमाम नववी की) मिन्हाज, (अल्लामा बैज़ावी की) मिन्हाज अल-वुसूल इला इल्म अल-उसूल और अल्फ़िय्या इब्ने मालिक हिफ़्ज़ किए।" आप के वालिद का विसाल *शब-ए पीर, 5 सफ़र 855 हिज्री* को हुआ।

आप के इल्मी सफ़र:

इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने जिन जगहों पर इल्मी सफ़र इख़्तियार फ़रमाए, उन में शाम, हिजाज़, यमन, हिन्द, मग़रिब और सूडान के शहर शामिल हैं।

आप ने फ़रमाया: "जब मैं ने हज्ज किया, तो आब-ए ज़मज़म पीते वक़्त जो दुआएँ या अरज़ू में थी, उन में से यह भी थी कि मैं फ़िक़्ह में शैख़ सिराजुद्दीन बुल्क़िनी और हदीस में हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी के मर्तबा को पहुँच जाऊँ।"

आप का इल्मी मक़ाम:

इमाम साहिब ने ख़ुद फ़रमाया: "मुझे सात उलूम में इत्क़ान अता फ़रमाया गया: तफ़्सीर, हदीस, फ़िक़्ह, नह्व, मआनी, बयान, और अहल-ए अरब व बुलग़ा के तर्ज़ पर, ना के मुझी और फ़लासिफ़ा के तर्ज़ पर।" मज़ीद फ़रमाया: "मैं इब्तिदा-ए तआल्लुम के ज़माने में मंतिक़ में कुछ पढ़ा करता था, फिर अल्लाह तआला ने मेरे दिल में उस की कराहत रासिख़ फ़रमा दी। और मैं ने सुना कि इब्ने अल-सलाह ने उस के हराम होने का फ़तवा सादिर फ़रमाया है, तो इस वजह से फिर मैं ने उसे छोड़ दिया, और अल्लाह तआला ने उस के बदले मुझे इल्म-ए हदीस अता फ़रमाया, जो के अशरफ़ अल-उलूम है।"

आप का ज़ुह्द-ओ-मर्तबा:

जब आप चालीस बरस की उम्र को पहुँचे, तो गोशा-नशीनी इख़्तियार फ़रमा ली और इबादत की ग़र्ज़ से दरवेशाना ज़िंदगी बसर करने लगे। दुनिया और अहल-ए दुनिया को यूँ छोड़ दिया के गोया किसी को जानते ही न थे। फिर अपनी तालीफ़ात-ओ-तहरीरात में मसरूफ़ हो गए, तदरीस-ओ-इफ़्ता भी तर्क फ़रमा दी, जिस का उज़्र आप ने अपनी तालीफ़ "अत-तख़फ़ीफ़" में पेश फ़रमाया।

उमरा-ओ-दुनिया आप की बरगाह में हाज़िर होते, आप को माल-ओ-ज़र पेश करते, मगर आप उन्हें लौटा देते। कभी हाकिम के दर पर नहीं जाते, हालाँके हाकिम-ए ज़माना ने बार-हा आप को तलब किया, मगर न गए।

ख़्वाब में नबी करीम ﷺ की ज़ियारत

इमाम साहिब फ़रमाते हैं: "मैं ने ख़्वाब में देखा के नबी करीम (ﷺ) जलवा-अफ़रोज़ हैं। तो मैं ने उन से एक किताब का तज़किरा किया और हदीसें जमा

करता गया, और वो किताब 'जम अल-जवामिअ' है। मैं ने आप (ﷺ) की बरगाह-ए अक़्दस में अर्ज़ की: 'क्या मैं आप की ख़िदमत-ए अक़्दस में कुछ हदीसें सुना सकता हूँ?' तो आप (ﷺ) ने फ़रमाया: 'पढ़ो, अय शैख़ अल-हदीस!'"

इमाम साहिब फ़रमाते हैं: "मेरे नज़्दीक यह बशारत दुनिया और जो कुछ दुनिया में है से ज़्यादा अहमियत की हामिल है।"

फ़ज़ाइल-ए-शैख़ैन

की शुरुआत इसे पेज के बाद से है

मुक़द्दिमा मुअल्लिफ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह के लिए जिस ने इस उम्मत में अबू बक्र सिद्दीक़ (रदी अल्लाहु अन्हु) को सबसे बेहतरीन किया और यक़ीन व तस्दीक़ की ज़ियादती के साथ उन के मक़ाम को बुलन्द फ़रमाया और बा तहक़ीक़ उन्हें शैख़ुल-इस्लाम बनाया। मैं उस की ख़ूबियाँ बयान करूँ कि उसी को सब ख़ूबियाँ सज़ावार हैं। और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह वह्दहू के सिवा कोई मअबूद बर-हक़ नहीं, उस का कोई शरीक नहीं, ऐसी गवाही जो गवाह की हर तंगी को कुशादा कर दे। और गवाही देता हूँ कि हमारे आक़ा मुहम्मद (सल्लल्लाहु 'अलैहि व सल्लम) उस के बन्दा ख़ास्स और उस के रसूल व ग़ैब बताने वाले बनी और रफ़ीक़ ए अअला हैं। अल्लाह त'आला आप पर और आप की आल पर, आप के सहाबा व अज़वाज व ज़ुर्रिय्यत पर दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमाए जो साहिब-ए हिदायत व तौफ़ीक़ हैं।

हम्द व सलात के बअद, ये किताब जिस का नाम मैं ने **"अर-रौज़ अल-अनीक फ़ी फ़ज़्ल अस-सिद्दीक़"** रखा है, इस किताब में मैं ने चालीस ऐसी मुख्तसर हदीसें नक़्ल की हैं जो उन के याद करने वाले नेकोकार के लिए आसान हैं। और मैं अल्लाह से सवाल करता हूँ कि अपने महबूब सैय्यिदिना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के वसीला जलीला और सिद्दीक़ अकबर (रदीअल्लाहु अन्हु) की जानिब इन्तिसाब की बरकत से हमें फ़ाइदा बख़्शे और हमें आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ मक़ाम-ए क़ुर्ब में जमअ फ़रमाए। आमीन, आमीन, आमीन।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अबू बक्र पर इख़्तिलाफ से इनकार

हदीस 1 : उम्मुल-मोमिनीन सैय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा रदीअल्लाहु अन्हा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "ऐ अबू बक्र! अल्लाह और मोमिनों ने इनकार कर दिया कि आपकी जात पर इख्तिलाफ़ करें।"

हवाला: *इस हदीस को इमाम अहमद बिन हंबल ने फ़ज़ाइल अस-सहाबा में हदीस नंबर: 226 पर (1/205) और इब्ने सअद ने अत-तबक़ात अल-कुबरा में (180/3) नक़ल किया।*

हदीस का मतलब (मफ़हूम) : *रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अबू बक्र रदीअल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि अल्लाह तआला और ईमान वाले इस बात को कभी क़बूल नहीं करेंगे कि तुम्हारी शख्सियत पर इख़्तिलाफ़ हो। यानी, तुम्हारी इमामत और पेशवाई पर कोई शक नहीं, अल्लाह और मोमिन उस पर मुत्तफिक़ हैं।*

नुक़्ता: *ये हदीस, हज़रत अबू बक्र रदीअल्लाहु अन्हु की खिलाफ़त और उम्मत में उनके मक़बूल होने का वाज़ेह दलील है। यह उन गुमराह फिरक़ों का रद्द करती है जो उनके मक़ाम पर शुब्हा डालते हैं जैसे शिआ लोग।*

अबू बक्र और उमर जन्नत .... के सरदार हैं

हदीस 2 : हज़रत अनस रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र और उमर जन्नत के दरमियानी (अधैर) उम्र वाले अगले पिछले (सब) के सरदार हैं, सिवाए अंबिया व रसूल के।"

हवाला: *इस हदीस को इमाम इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में हदीस नंबर: 1904 पर हज़रत अबू जुहैफ़ा की रिवायत से (330/15), इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी सुनन में हदीस नंबर: 3664 पर बाब मनाक़िब अबी बक्र व उमर रदीअल्लाहु अन्हुमा कलीमा में, इमाम इब्ने माजा ने अपनी सुनन में हदीस नंबर: 100 पर हज़रत अबू तहीफ़ा दहली की रिवायत से बाब फी फज़ाइल अस्हाब रसूलुल्लाह ﷺ में, और उनके इलावा दूसरों ने नक़ल किया।*

अबू बक्र जन्नत में हैं

हदीस 3 : हज़रत सईद बिन ज़ैद से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र जन्नत में हैं, उमर जन्नत में हैं, उस्मान जन्नत में हैं, अली जन्नत में हैं, तल्हा जन्नत में हैं, ज़ुबैर जन्नत में हैं, अब्दुल रहमान बिन औफ़ जन्नत में हैं, सअद बिन अबी वक़्क़ास जन्नत में हैं, सईद बिन ज़ैद जन्नत में हैं और उबैदह बिन अल-जर्राह जन्नत में हैं।" (रदीअल्लाहु त'आला अन्हुम अजमईन)

हवाला: *इस हदीस को इमाम इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में हदीस नंबर: 7002 पर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ की रिवायत से (463/15), इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी सुनन में हदीस नंबर: 3748 पर बाब फज़ाइलुल-अशरह में, व दीगर ने नक़ल किया।*

अबू बक्र और उमर की हुज़ूर ﷺ से निस्बत

हदीस 4 : हज़रत मुत्तलिब बिन अब्दुल्लाह बिन खत्ताब अपने वालिद और वो उनके दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र और उमर मुझ से ऐसे हैं जिस तरह कान और आँख सर में (अहम) होते हैं।" कि इस हदीस को इमाम बारूदी और अबू नुऐम व ग़ैर-हुम ने तख़रीज किया।

हवाला: *इस हदीस को इमाम इब्ने अब्दुल बर्र ने अल-इस्ती'आब में (461/1) नक़ल किया।*

अबू बक्र और उमर की इस्लाम से निस्बत

हदीस 5 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीअल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, **"अबू बक्र और उमर इस दीन (इस्लाम) में उस मर्तबे पर हैं जैसा सर में कान और आँख से।"**

हवाला: *इस हदीस की इब्ने नज्जार ने तख़रीज की और खतीब बग़दादी ने उसे अपनी तारीख में हज़रत जाबिर से तख़रीज किया।*

अबू बक्र رضي الله عنه मेरे बाद मेरी उम्मत पर मेरे खलीफ़ह हैं

हदीस 6 : हज़रत जाबिर रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र सिद्दीक़ मेरे वज़ीर हैं और मेरे बाद मेरी उम्मत पर मेरे खलीफ़ह हैं, और उमर मेरी ज़बान हैं (गोया होते हैं), और अली वो मेरे चाचा-ज़ाद और मेरे भाई हैं और मेरे अल्म-बरदार हैं, और उस्मान मुझ से हैं और मैं उस्मान से।" इस हदीस की तख़रीज इमाम तबरानी ने कबीर में और इब्ने अदी ने कामिल में की और इसके इलावा दीगर ने लिए।

हवाला: *इस हदीस को इब्ने अदी ने कामिल में हदीस नंबर: 1616 पर (83/6), दैलमी ने अल-फिरदौस बि-मअसूर अल-खिताब में हदीस नंबर: 782 उपर (437/1) और क़ज़वीनी ने अल-तद्वीन फी अख़बार क़ज़वीन (164/4) में, और उनके इलावा दीगर ने नक़ल किया।*

अबू बक्र رضي الله عنه सब से बड़े मेहरबान व रहीम

हदीस 7 : हज़रत शद्दाद बिन औस रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, **"अबू बक्र मेरी उम्मत के सब से बड़े मेहरबान व रहम करने वाले हैं, और उमर मेरी उम्मत में बेहतर और सब से बढ़ कर इंसाफ करने वाले हैं, और उस्मान बिन अफ़्फान मेरी उम्मत में सब से ज़्यादा हया फरमाने वाले और मुअज़्ज़म हैं, और अली बिन अबी तालिब मेरी उम्मत के साहिब-ए इस्तिक़ामत और शुजाअत-मंद हैं, और अब्दुल्लाह बिन मसऊद मेरी उम्मत के नेक-तर और एहसान करने वाले हैं, और अबू ज़र्र मेरी उम्मत के ज़ाहिद-तर और सच्चे हैं, और अबू दर्दा मेरी उम्मत के बड़े इबादत-गुज़ार व मुत्तक़ी हैं, और मुआविया बिन अबी सुफ़ियान बेहतर हाकिम और बड़े सख़ी हैं।"**

है मालूम होना चाहिए कि दईफ़ हदीसें फज़ाइल में मक़बूल होती हैं।

मुतर्जिम: यह हदीस अलाउद्दीन अली मुत्तक़ी ने कंज़ अल-उम्माल में हदीस नंबर: 3367 पर नक़ल की।

हवाला : इस हदीस को इब्ने असाकिर ने तख़रीज कर के दईफ़ करार दिया, और उनके इलावा दीगर ने भी इस हदीस की तख़रीज की।

अबू बक्र अगलों में बेहतरीन हैं

हदीस 8 : हज़रत अबू हुरैरा रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि "अबू बक्र और उमर अगलों में बेहतरीन हैं, आसमान व ज़मीन वालों में बेहतरीन हैं, सिवाए अंबिया व मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम के।"

हवाला : *इस हदीस को इब्ने अदी ने कामिल में हदीस नंबर: 368 पर (180/2), इब्ने - जौज़ी ने अल-इलल अल-मुतनाहिया में हदीस नंबर: 311 पर अहादीस फज़्ल अबी बक्र व उमर रदीअल्लाहु अन्हुमा के बाब में (198/1), इमाम ज़हबी ने मीज़ानु ल-इतिदाल फी नक़्ददुर-रिजाल में हदीस नंबर: 1437 पर (111/2) और हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी ने लिसानुल मीज़ान में हदीस नंबर: 379 पर (94/2) नक़ल किया।*

इसे इब्ने अदी ने कामिल में और हाकिम ने मुस्तदरक में और खतीब बग़दादी ने अपनी तारीख़ में तख़रीज किया।

अफ़ज़लुल बशर बादल अम्बिया

हदीस 9 : हज़रत इक्रीमह बिन अम्मार से मरवी, वो इयास बिन सलमह बिन अकवा' से, वो अपने वालिद (रदीअल्लाहु अन्हु) से रिवायत बताते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र मेरे बाद तमाम लोगों में बेहतरीन हैं सिवाए अंबिया के।"

हवाला : *इस हदीस को इब्ने अदी ने कामिल में (276/5), बैहकी ने मजमा उज़-ज़वाइद में और अजलूनी ने कश्फ उल-खफा में हदीस नंबर: 51 पर (32/1) नक़ल किया।*

अबू बक्र मेरे साथी व मेरे यार-ए-ग़ार हैं

हदीस 10 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र मेरे साथी व मेरे यार-ए-ग़ार हैं, उनके (बुलंद) मर्तबे को जान लो! पस अगर मैं (सिवाए अल्लाह के) किसी को दोस्त बनाता तो अबू बक्र को बनाता।"

***हवाला** : इस हदीस को इमाम अहमद बिन हंबल ने फ़ज़ाइल अल-सहाबा में हदीस नंबर: 603 पर (396/1), अबू नुऐम ने हिल्यत अल-औलिया में (26/5) और बैहकी ने मजमा अल-ज़वाइद में (42/9) नक़ल किया।*

इस हदीस को दैलमी ने अल-फिरदौस बि-मअसूर अल-खिताब में हदीस नंबर: 1783 पर (1/438) पर और खतीब ने इस हदीस को ने अल-फिरदौस बि-मा व: बग़दादी ने अपनी तारीख़ में (252/5) नक़ल किया।

अबू बक्र मुझ से

हदीस 11 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र और उमर मुझ से हैं जैसा कि मेरी आँखें मेरे सर में, और उस्मान बिन अफ़्फान मुझ से हैं जैसा कि मेरी ज़बान मेरे ज़ेहन में, और अली बिन अबी तालिब मुझ से हैं जैसे मेरी रूह मेरे जिस्म में।"

***हवाला** : इस हदीस को 'अल्लामा अलाउद्दीन अली अल-मुत्तकी ने कंज़ अल-उम्माल में हदीस नंबर: 33062 पर (228/11) नक़ल किया।*

अबू बक्र मुझ से ......

हदीस 12 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीअल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, **"अबू बक्र और उमर मुझ से इस तरह हैं कि जिस तरह हारून मूसा (अलैहिमुस्सलाम) से है।**

***हवाला** : इस हदीस को खतीब बग़दादी ने अपनी तारीख़ में हदीस नंबर: 6257 पर (384/11), इमाम ज़हबी ने मीज़ानुल इतिदाल में हदीस नंबर: 2015 पर (207/5) और इब्ने अदी ने कामिल में हदीस नंबर: 1254 पर (75/5) नक़ल किया।*

अबू बक्र दुनिया व आख़िरत में मेरे भाई

हदीस 13 : उम्मुल-मोमिनीन सैय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा रदीअल्लाहु अन्हा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र मुझ से हैं और मैं उन से, और अबू बक्र दुनिया व आख़िरत में मेरे भाई हैं।"

***हवाला** : इस हदीस को दैलमी ने अल-फिरदौस बि-मअसूर अल-खिताब में हदीस नंबर: 1780 पर (437/1) नक़ल किया।*

अबू बक्र आसमान और ज़मीन वालों में बेहतरीन

हदीस 14 : हज़रत अबू हुरैरा रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र और उमर आसमान वालों और ज़मीन वालों में बेहतरीन हैं, और क़ियामत तक बाक़ी रहने वालों से भी बेहतर हैं।"

***हवाला** : इस हदीस को दैलमी ने अल-फिरदौस बि-मअसूर अल-खिताब में हदीस नंबर: 1783 पर (1/438) पर और खतीब ने इस हदीस को ने अल-फिरदौस बि-मा व: बग़दादी ने अपनी तारीख़ में (252/5) नक़ल किया।*

***हवाला** : इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी सुनन में हदीस नंबर: 3679 पर उम्मुल-मोमिनीन सैय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा रदीअल्लाहु अन्हा की रिवायत से नक़ल किया कि हज़रत अबू बक्र मुझे नबी ए करीम ﷺ की बारगाह में हाज़िर हुए तो आप ﷺ ने फ़रमाया, "आप अल्लाह की जानिब से जहन्नम से आज़ाद शुदह हैं।" तो उस दिन से आप ﷺ का नाम 'अतीक़ हो गया। और मिज़्ज़ी ने इस हदीस को तहज़ीब अल-कमाल में (284/15) नक़ल किया।*

अबू बक्र आग से आज़ाद शुदह हैं

हदीस 15 : उम्मुल-मोमिनीन सैय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा रदीअल्लाहु अन्हा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र अल्लाह की जानिब से आग से आज़ाद शुदह हैं।"

***हवाला** : इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी सुनन में हदीस नंबर: 3679 पर उम्मुल-मोमिनीन सैय्यिदा आयशा सिद्दीक़ा रदीअल्लाहु अन्हा की रिवायत से नक़ल किया कि हज़रत अबू बक्र मुझे नबी करीम ﷺ की बारगाह में हाज़िर हुए तो आप ﷺ ने फ़रमाया,*

"आप अल्लाह की जानिब से जहन्नम से आज़ाद शुदह हैं।" तो उस दिन से आप ﷺ का नाम 'अतीक़ हो गया। और मिज़्ज़ी ने इस हदीस को तहज़ीब अल-कमाल में (284/15) नक़ल किया।

इसे अबू नुऐम ने मारिफ़ा में तख़रीज किया।

अबू बक्र मेरे क़ाइम मक़ाम वज़ीर हैं

हदीस 16 : हज़रत अनस रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र मेरे क़ाइम मक़ाम वज़ीर हैं, और उमर मेरी ज़बान से गोया हैं और मैं उस्मान से हूँ और उस्मान मुझ से जैसा कि मैं आप से हूँ। ऐ अबू बक्र! आप मेरी उम्मत की शफाअत फरमाएँगे।"

हवाला *: इस हदीस को दैलमी ने अल-फिरदौस बि-मअसूर अल-खिताब में हदीस नंबर: 1782 पर (1/437) नक़ल किया।*

अबू बक्र पहला जन्नती है

हदीस 17 : हज़रत अबू हुरैरा रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "मेरे पास जिब्रील हाज़िर हुए और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे जन्नत का दरवाज़ा दिखाया जिस से मेरी उम्मत दाख़िल होगी। तो हज़रत अबू बक्र ने अर्ज़ की, या रसूलुल्लाह! मेरी ख्वाहिश है कि मैं भी आप के साथ होता ता कि जन्नत देख लेता। तो नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, 'अरे अबू बक्र! आप तो जन्नत में दाख़िल होने वालों में मेरी उम्मत के पहले शख़्स हैं।'"

हवाला *: इस हदीस को इमाम अबू दाऊद ने अपनी सुनन में हदीस नंबर: 3652 पर बाब फिल-खुलफा में, और इमाम अहमद ने अपनी फ़ज़ाइल अस-सहाबा में हदीस नंबर: 258 पर (221/1) नक़ल किया।*

इस हदीस को **इमाम अबू दाऊद** वग़ैरह ने तख़रीज किया। और **इमाम हाकिम** ने दूसरी सनद से इसे सहीह करार दिया।

अबू बक्र उम्मत में सब से अफ़ज़ल

हदीस 18 : **हज़रत अली रदीअल्लाहु अन्हु** से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, **"जिब्रील मेरी खिदमत में हाज़िर हुए तो मैंने उन से कहा, मेरे साथ कौन हिजरत करेगा? अर्ज़ की, अबू बक्र (रदीअल्लाहु अन्हु)। वही आप के बाद आप की उम्मत के वाली हैं और वही "आप की उम्मत में सब से अफ़ज़ल हैं।"**

हवाला : इस हदीस को दैलमी ने अल-फिरदौस बि-मअसूर अल-खिताब में हदीस नंबर: 131 उपर (404/1) नक़ल किया।

इसे **दैलमी** ने तख़रीज किया।

अबू बक्र से मशवरा लेना

हदीस 19 : **हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदीअल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "मेरे पास जिब्रील हाज़िर हुए, मुझ से अर्ज़ की, 'ऐ मुहम्मद (ﷺ)! बे-शक अल्लाह त'आला आप को हुक्म फ़रमाता है कि आप अबू बक्र (रदीअल्लाहु अन्हु) से मशवरा लें।'"**

हवाला : इस हदीस को इमाम तबरी ने अल-रियाज़ अल-नज़रा में ज़िक्र इख्तिसाइह बि-अम्र अल्लाह त'आला नबीह बि-मुशावरतिह में नक़ल किया।

अबू बक्र رضي الله عنه तुझ से बेहतर हैं

हदीस 20 : **हज़रत अबू अल-दर्दा से मरवी है फरमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने एक शख़्स को देखा जो हज़रत अबू बक्र (रदीअल्लाहु अन्हु) से आगे आगे चल रहा था तो आप ﷺ ने उस से फ़रमाया, "क्या तू ऐसे शख़्स से आगे आगे चलता है जो तुझ से बेहतर हैं? बे-शक अबू बक्र हर उस शख़्स से बेहतर हैं जिस पर शब-ओ-रोज़ का गुज़र है।"**

हवाला : इन अलफ़ाज़ के साथ इस हदीस को इब्ने सहल वासिती ने तारीख़ वासित में बाब मुहम्मद बिन अब्द अल-खालिक़ अल-अत्तार में (1/238) नक़ल किया।) **अबू नुऐम ने हिल्यतुल औलिया में यूँ नक़ल किया कि हज़रत**

अबू अल-दर्दा से मरवी है: मुझे नबी करीम ﷺ ने देखा कि मैं अबू बक्र (रदीअल्लाहु अन्हु) के आगे आगे चल रहा हूँ तो फ़रमाया, "क्या आप रहे अबू बक्र के आगे चलते हैं? अंबिया व मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम के बाद सूरज किसी ऐसे शख़्स पर न तलू हुआ न ग़ुरूब हुआ जो अबू बक्र से अफ़्ज़ल हो।"

और **अबू नुऐम** ने इस हदीस को फज़ाइले सहाबा में रिवायत किया। इस के अलफ़ाज़ यह हैं कि:

"क्या तू ऐसे शख़्स के आगे आगे चलता है जो तुझ से बेहतर हैं? क्या तू नहीं जानता कि हर वो शख़्स जिस पर सूरज तलू या ग़ुरूब होता है, अबू बक्र उन सब से बेहतर हैं? अंबिया व मुरसलीन के बाद सूरज किसी ऐसे शख़्स पर न तलू हुआ और न ग़ुरूब हुआ जो अबू बक्र से अफ़्ज़ल हो।"

हवाला : इन अलफ़ाज़ के साथ खैथमा बिन सुलेमान ने मिन हदीस खैथमा में (133/1) नक़ल किया।

अबू बक्र मेरी उम्मत पर ग़ालिब रहे

हदीस 21 : हज़रत अबू उमामा (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, मुझे मीज़ान (तराज़ू) के पलड़े के पास लाया गया और मुझे उस में रख दिया गया और मेरी उम्मत को लाया गया और उन्हें दूसरे पलड़े में रख दिया गया तो मैं अपनी उम्मत पर ग़ालिब रहा, फिर मुझे उठा लिया गया और अबू बक्र को लाया गया फिर उन्हें तराज़ू के उस पलड़े में रखा गया तो वह (भी) मेरी उम्मत पर ग़ालिब रहे। फिर अबू बक्र को उठा लिया गया और उमर बिन ख़त्ताब को लाया गया और उन्हें भी तराज़ू के उस पलड़े में रखा गया तो वह (भी) मेरी उम्मत पर ग़ालिब रहे। फिर उस मीज़ान (तराज़ू) को आसमान की तरफ उठा लिया गया जबकि मैं उसे देख रहा था। इस हदीस को अबू नईम ने फ़ज़ाइल में तख़रीज किया।

***हवाला :** इस हदीस को इख़्तिसार के साथ इमाम इब्ने अबी शैबा ने "अल-मुसन्नफ" में हदीस नंबर: 31970 पर (352/6), इमाम इब्ने अबी आसिम ने "अल-सुन्नह" में हदीस नंबर: 1138 पर (539/2) और इमाम तबारी ने "अल-रियाद अल-नदरह" में (270/1) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) से ज़िक्र रुजहान कुल वाहिद मिन्हुम जमी' अल-उम्मह में नक़्ल किया।*

अबू बक्र ﷺ सब से महबूब

हदीस 22 : **हज़रत अम्र बिन अल-आस (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, मेरे नज़दीक औरतों में सब से मेहबूब आइशा हैं और मर्दों में उन के वालिद (यानी सिद्दीक-ए-अकबर हैं)।**

हवाला *: इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने अपनी सहीह में हदीस नंबर: 4358 पर किताब (14) अल-मग़ाज़ी, बाब (25) ग़ज़वत ज़ात अल-सलासिल में यूँ नक़्ल किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अम्र बिन अल-आस (रदीअल्लाहु अन्हु) को ज़ात अल-सलासिल के लश्कर के लिए तरग़ीब दी, हज़रत अम्र बिन अल-आस (रदीअल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं कि मैं ने आप की बरगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ की, आप के नज़दीक सब से मेहबूब कौन है? फ़रमाया, आइशा। मैं ने अर्ज़ की, मर्दों में? फ़रमाया, उन के वालिद (यानी अबू बक्र)। मैं ने अर्ज़ की, फिर कौन? फ़रमाया, उमर। यूँही कई सहाबा के नाम गिनवाते रहे, तो मैं मज़ीद पूछने से इस ख़ौफ़ के साबित ख़ामोश रह गया कि कहीं मुझे उन सब से आख़िर में क़रार न फरमा दें।*

अबू बक्र और रसूलुल्लाह (ﷺ) साथ जमा होंगे

हदीस 23 : **हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं और अबू बक्र और उमर रोज़-ए-क़यामत साथ जमा होंगे।" (ये बयान करते हुए नबी करीम (ﷺ) ने अपनी उंगली-ए-शहादत, बीच वाली मुबारक उंगली और उसके साथ वाली उंगली-ए-मुक़द्दस आपस में मिला कर फ़रमाया) "और हम लोगों पर मेहरबान होंगे।"**

हवाला *: इस हदीस को हाकिम तिर्मिज़ी ने नवादिरुल-उसूल फी अहादीस अल-रसूल में (142/3) नक़्ल किया।*

रोज़-ए-क़यामत अबू बक्र

हदीस 24 : **हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) ही से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "मैं रोज़-ए-क़यामत अबू बक्र व उमर के दरमियान जमा होंगा, यहाँ तक कि मैं हरमैन शरीफ़ैन (यानी मक्का मुकर्रमा**

और मदीना मुनव्वरा) के दरमियान आऊँगा। फिर मेरे पास अहले-मदीना और अहले-मक्का (अपनी क़ब्रों से उठ कर) हाज़िर होंगे।"

हवाला *: इस हदीस को इमाम ज़हबी ने मीज़ानुल-इतिदाल फी नक़्द अल-रिजाल में यूँ बयान किया: "मैं अबू बक्र व उमर के दरमियान रोज़-ए-क़यामत आऊँगा, फिर हरमैन (मक्का व मदीना) के दरमियान नमाज़ पढ़ूँगा, फिर अहले-मक्का व अहले-मदीना मेरे पास हाज़िर होंगे।" (57/4)*

अबू बक्र को ख़िलाफ़त की सनद

हदीस 25 : उम्म-उल-मोमिनीन सैय्यदा आइशा सिद्दीका (रदीअल्लाहु अन्हा।) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, "(ऐ आइशा!) अपने वालिद अबू बक्र और अपने भाई को बुलाओ ताकि मैं उनके लिए एक मक़तूब लिख दूँ। मुझे ख़ौफ़ है कि कोई शख़्स तमन्ना करेगा और कहने वाला कहेगा कि मैं (ख़िलाफ़त का हक़दार हूँ), हालाँकि (हक़-ए-ख़िलाफ़त में) अल्लाह और तमाम मोमिनीन अबू बक्र के सिवा सब का इन्कार करते हैं।"

हवाला *: इस हदीस को इमाम इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में हदीस नंबर: 1598 पर ज़िक्र इला मा अशारा बिही फी अबी बक्र (564/14) और इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में हदीस नंबर: 2387 पर किताब फ़ज़ाइलुस-सहाबा में नक़्ल किया।*

अबू बक्र व उमर की पैरवी

हदीस 26 : हज़रत हुज़ैफ़ा (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "इन दोनों की पैरवी करो जो मेरे बाद हैं—अबू बक्र व उमर।"

हवाला *: इस हदीस को इमाम इब्ने माजा ने अपनी सुनन में मुक़द्दमा में हदीस नंबर: 97 पर बाब फ़ज़ाइल अस्हाब-ए-रसूलुल्लाह (ﷺ) में और इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी सुनन में हदीस नंबर: 3662 पर *किताब (50) अल-मनाक़िब, बाब (16) फी मनाक़िब अबी बक्र व उमर (रदीअल्लाहु अन्हु)* में नक़्ल किया।*

अबू बक्र और उमर अल्लाह की मज़बूत रस्सी

हदीस 27 : हज़रत अबू दर्दा (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "इन दोनों की पैरवी करो जो मेरे बाद हैं—अबू बक्र और उमर। पस ये दोनों अल्लाह की मज़बूत रस्सी हैं। जिसने उन्हें थाम लिया, तो बिलाशुबा ऐसे मज़बूत हल्क़े को थाम लिया जिसके लिए कोई जुदाई नहीं है।"

हवाला : *इस हदीस को इमाम तबरी ने अल-रियाद अल-नदरह में हदीस नंबर: 225 पर और इमाम तबरानी ने मुस्नद अल-शामियीन में हदीस नंबर: 913 पर (57/2) नक़्ल किया।*

हदीस 28 : हज़रत सहल बिन अबी हम्मा (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "जब मेरा विसाल हो जाए और अबू बक्र और उमर का विसाल हो जाए, तो अगर तुमसे हो सके कि मर जाओ तो मर जाना।"

हवाला : *इस हदीस को इमाम तबरानी ने अल-औसत में हदीस नंबर: 6918 पर (83/7) नक़्ल किया।*

ख़्वाब की ताबीर अबू बक्र से

हदीस 29 : हज़रत समुरा (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "मुझे मामूर फ़रमाया गया कि मैं ख़्वाब की ताबीर अबू बक्र से मालूम करूँ।"

हवाला : *इस हदीस को इमाम अहमद ने फ़ज़ाइलुस-सहाबा में हदीस नंबर: 123 पर (404/1) नक़्ल किया।*

इस हदीस को दैलमी ने तख़रीज किया। नबी करीम (ﷺ) के सहाबा में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रदीअल्लाहु अन्हु) ने सब से बेहतर ख़्वाबों की ताबीर बयान की।

अबू बक्र मेरे बेहतरीन सहाबी

हदीस 30 : हज़रत जाबिर (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:**"बेशक अल्लाह त'आला ने मेरे सहाबा को अंबिया व मुरसलीन के इलावा तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत अता फरमाई, और मेरे लिए मेरे**

सहाबा से चार को चुन लिया और उन्हें मेरे बेहतरीन सहाबी बनाया, जबकि मेरे हर सहाबी में ख़ैर ही है। (वो चार): अबू बक्र, उमर, उस्मान और अली (रदीअल्लाहु अन्हुम)। और मेरी उम्मत को तमाम उम्मतों से फ़ज़ीलत अता फरमाई और मुझे बेहतरीन ज़माने में मबऊस फ़रमाया, फिर दूसरा और तीसरा ज़माना पै दर पै (बेहतर) हैं, फिर चौथा ज़माना अलाहदा है।"

हवाला *: इस हदीस को ख़तीब बग़दादी ने अपनी तारीख़ में हदीस नंबर: 1204 पर (162/3) और मौज़ू औहम अल-जम वल-तफ़रीक़ में हदीस नंबर: 352 (312/2) पर नक़्ल किया।*

अबू बक्र से महब्बत का हुक्म

हदीस 31 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "बेशक अल्लाह त'आला ने मुझे मेरे सहाबा में से चार से (ज़्यादा) महब्बत का हुक्म फ़रमाया और फ़रमाया कि उनसे महब्बत कीजिए: अबू बक्र, उमर, उस्मान और अली (रदीअल्लाहु अन्हु)।"

हवाला: *इस हदीस को इमाम ज़हबी ने मीज़ान अल-इतिदाल फी नक़्द अल-रिजाल में (308/3) पर। इब्ने अदी ने अल-कामिल में हदीस नंबर:758 (289/3) पर नक़्ल किया है।*

अबू बक्र और उमर के ज़रिए मदद

हदीस 32 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:
"बेशक अल्लाह त'आला ने चार वज़ीरों के ज़रिए मेरी मदद फरमाई है: दो आसमान वाले—जिब्रील और मिकाईल (अलैहिस्सलाम), और दो ज़मीन वाले—अबू बक्र और उमर (रदीअल्लाहु अन्हु)।"

इस हदीस को इमाम तबरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर में हदीस नंबर: 1342 पर (279/11) नक़्ल किया।

बड़ा एहसान करने वाले अबू बक्र

हदीस 33 : हज़रत अबू सईद (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:

"बेशक अल्लाह त'आला ने अपने एक बंदे को इख्तियार दिया है कि दुनिया में रहे या उसके पास (अल्लाह के हुज़ूर)। लिहाज़ा उस बंदे ने अल्लाह के हुज़ूर रहने को चुन लिया।"

तो ये सुन कर अबू बक्र (रदीअल्लाहु अन्हु) रोने लगे, क्योंकि आप (ﷺ) अपनी कमाल फ़रासत के सबब जान गए थे कि नबी करीम (ﷺ) अपने विसाल मुबारक की ख़बर दे रहे हैं। तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़रमाया:

"ऐ अबू बक्र! मत रो ! तमाम लोगों में अपनी सोहबत व माल के ए'तिबार से मुझ पर बड़ा एहसान करने वाले अबू बक्र ही हैं। अगर मैं अपने रब के सिवा किसी को दिली दोस्त बनाता तो मैं अबू बक्र को दोस्त बनाता, लेकिन आप इस्लाम का भाई चारा और उसकी दोस्ती हैं। मस्जिद में तमाम दरवाज़े बंद कर दिए जाएँ सिवाए अबू बक्र के दरवाज़े के।"

इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने इख्तिलाफ अल्फाज़ के साथ अपनी सहीह में हदीस नंबर: 3454 पर बाब क़ौल अल-नबी... और हदीस नंबर: 1594 पर (558/14) पर। इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में हदीस नंबर: 2381 पर किताब फ़ज़ाइल अल-सहाबा, बाब फ़ज़ाइल अबी बक्र अल-सिद्दीक़ में नक़्ल किया।

इस हदीस को इमाम मुस्लिम वग़ैरा ने तख़रीज किया।

अबू बक्र को ग़लतियों से महफ़ूज़ रखना

हदीस 34 : हज़रत मुआज़ (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:

"बेशक अल्लाह त'आला अपने शान-ए-शान (अर्श-ए-आज़म) से नापसंद फ़रमाता है कि अबू बक्र (रदीअल्लाहु अन्हु) (ज़मीन पर) ग़लती करें (यानी अल्लाह त'आला ने आप को ग़लतियों से महफ़ूज़ फरमा लिया है)।"

इस हदीस को इमाम अहमद ने फ़ज़ाइलुस सहाबा में हदीस नंबर: 659 पर (321/1) पर और इमाम तबरानी ने अल-नज्म अल-कबीर में हदीस नंबर: 124 (67/20) पर नक़्ल किया।

अबू बक्र व उमर से महब्बत का हुक्म

हदीस 35 : हज़रत अनस (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "मैं अपनी उम्मत से अबू बक्र व उमर से महब्बत की यूँ ही उम्मीद रखता हूँ जैसे उनके लिए 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहने (यानी ईमान) की ख़्वाहिश है।"

दैलमी ने अल-फिरदौस बि मअसुर अल-खिताब में हदीस नंबर: 167 (59/1) पर नक़्ल किया।

अबू बक्र ख़्वाबों की तावील बयान ....

हदीस 36 : हज़रत समुरा (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया: "बेशक अबू बक्र (रदीअल्लाहु अन्हु) ख़्वाबों की तावील बयान करते हैं और बिला-शुबा नेक ख़्वाब नुबूवत का हिस्सा हैं।"

इस हदीस को इमाम तबरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर में हदीस नंबर: 7057 (260/7) पर नक़्ल किया।

दैलमी ने अल-फिरदौस बि मअसुर अल-खिताब में हदीस नंबर: 167 (59/1) पर नक़्ल किया।

अबू बक्र मेरी उम्मत के रहम-दिल हैं

हदीस 37 : हज़रत अनस (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:

"मेरी उम्मत के रहम-दिल अबू बक्र (रदीअल्लाहु अन्हु) हैं, अल्लाह के दीन में शदीद-तर उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) हैं, हया में सच्चे उस्मान (रदीअल्लाहु अन्हु) हैं, और फैसला सादिर करने में मुन्सिफ़ अली बिन अबी तालिब (रदीअल्लाहु अन्हु) हैं। इल्म-ए-मीरास में ज़ैद बिन साबित (रदीअल्लाहु अन्हु), और क़ुरान मजीद की क़िराअत में उबै बिन काब (रदीअल्लाहु अन्हु), और हलाल व हराम के इल्म में मुआज़ बिन जबल (रदीअल्लाहु अन्हु) बरतर

हैं। सुनो! हर उम्मत का एक अमीन होता है और इस उम्मत के अमीन अबू उबैदा बिन जर्राह (रदीअल्लाहु अन्हु) हैं।"

इस हदीस को इमाम बैहक़ी ने अपनी सुनन अल-कुबरा में हदीस नंबर: 1967 (210/6) पर।

इमाम अबू याला ने अपनी मुस्नद में हदीस नंबर: 5763 (141/10) पर नक़्ल किया।

(ख़्याल रहे कि जो ख़ूबियां दीगर सहाबा कराम (रदीअल्लाहु अन्हु) में फ़र्दन फ़र्दन पाई जाती हैं, सैय्यदिना सिद्दीक़-ए-अकबर (रदीअल्लाहु अन्हु) तन्हा इन ख़ूबियों का पैकर हैं।)

दो ख़ास सहाबा

हदीस 38 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:
"बेशक हर नबी के कुछ ख़ास सहाबा होते हैं और मेरे सहाबा से दो ख़ास हैं— अबू बक्र और उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) हैं।"

इस हदीस को इमाम तबरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर में हदीस नंबर: 10008 (77/10) पर और दैलमी ने अल-फिरदौस बि मअसुर अल-खिताब में हदीस नंबर: 5005 (334/3) पर नक़्ल किया।

अबू बक्र व उमर के लिए ज़मीन खुलेगी

हदीस 39 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया:
"बेशक जिस के लिए सब से पहले ज़मीन खुलेगी वो मैं हूँ, फिर अबू बक्र व उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) के लिए खुलेगी। हम (तीनों) जमा होंगे और बक़ी की जानिब जाएंगे। बाद अज़ान अहले-बक़ी' मेरे साथ जमा होंगे। फिर मैं अहले-मक्का का इंतज़ार करूँगा तो वो भी मेरे साथ जमा हो जाएंगे और हम हरमैन के दरमियान भेजे जाएंगे।"

इस हदीस को इमाम इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में हदीस नंबर: 1899 (324/15) पर, इमाम हाकिम ने मुस्तदरक में हदीस नंबर: 3732 (505/2) पर नक़्ल फ़रमाया और

फ़रमाया के "ये हदीस सहीह है।" और इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी सुनन में हदीस नंबर: 3692 पर "बाब मनाक़िब उमर बिन अल-खत्ताब" में भी नक़्ल फ़रमाया।

इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने तख़रीज किया और फ़रमाया: "ये हदीस हसन ग़रीब है।"

अबू बक्र की शान में भी शेर

हदीस 40 : हज़रत अनस (रदीअल्लाहु अन्हु) से मर्वी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत हस्सान (रदीअल्लाहु अन्हु) से फ़रमाया:
"क्या आप ने अबू बक्र (रदीअल्लाहु अन्हु) की शान में भी शेर कहे हैं?"
अर्ज़ की: "जी हाँ।"
फ़रमाया: "पढ़िए, मैं भी सुनूँ!"

(हज़रत हस्सान (रदीअल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं) मैं ने पढ़ा:

وَثَانِيَ اثْنَيْنِ فِي الْغَارِ الْمَنِيفِ وَقَدْ
طَافَ الْعَدُوُّ بِهِ إِذْ صَاعَدَ الْجَبَلاَ
وَكَانَ حِبَّ رَسُولِ اللَّهِ قَدْ عَلِمُوا
مِنَ الْبَرِيَّةِ لَمْ يَعْدِلْ بِهِ رَجُلاً

तर्जुमा:
"दो जान से जब वो दोनों बुलंद ग़ार में थे, और दुश्मन उन पर गुज़रे जब वो पहाड़ पर चढ़े। और वो तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के मेहबूब हैं, बेशक लोगों ने जान लिया कि मख़लूक़ में उन के बराबर कोई शख़्स नहीं।"

तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तबस्सुम फ़रमाया यहाँ तक कि आप के नवाज़िज़ (दंदान-ए-मुबारक) नज़र आने लगे और फ़रमाया:
"ऐ हस्सान! आप ने सच कहा, उन की शान ऐसी है जैसा आप ने फ़रमाया है।"

इस हदीस को इब्ने अदी ने अल-कामिल में हदीस नंबर: 350 पर "बाब मन इस्मुहु अल-जर्राह" (120/2) पर और इब्ने सअद ने अल-तबक़ात में (174/3) पर नक़्ल किया।

फ़ज़ाइल

ए

उमर ﷺ

मुक़द्दिमह मुअल्लिफ

तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह के लिए जिस ने अपने बन्दों से जिसे चाहा शरफ़ ओ मंज़िलत बख़्शी और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वही बे-राह रवी और सआदत मंदी का मालिक है और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे आक़ा उस के बन्दा ख़ास और रसूल हैं जिन्हों ने राह हिदायत को क़ाइम किया। अल्लाह त'आला उन पर उन की आल ओ असहाब और बुज़ुर्ग अइम्मह किराम पर दरूद ओ सलाम नाज़िल फरमाए।

हम्द ओ सलवात के बाद ये किताब जिस का नाम मैं ने **"अल-ग़ुरुर फी फज़ाइल उमर"** रखा है, इस में मैं ने चालीस हदीसें उन की तख़रीज करने वालों की तरफ महसूब करते हुए, उन अहादीस के ग़रीब अल्फ़ाज़ और उन में दुश्वार या मुश्तबह उमूर को बयान करते हुए लिखती हूँ। अल्लाह त'आला से दुआ है कि इसे नफ़-बख़्श बना दे, आमीन।

उमर ﷺ जन्नत के ...... सरदार

हदीस 1 : हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र व उमर जन्नत के दरमियानी उमर (age) वाले अगले पिछलों (सब) के सरदार हैं सिवाये अंबिया व रसूल के।"

इस हदीस को इमाम इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में हदीस नंबर: 1904 पर हज़रत अबू जमीलह इल्म की रिवायत से (330/15), इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी सुनन में हदीस नंबर: 3664 पर "बाब मनाकिब अबी बक्र व उमर रदीअल्लाहु अन्हुमा" के हैसियत में, इमाम इब्ने माजा ने अपनी सुनन में हदीस नंबर: 100 पर हज़रत अबू हुतैफ़ा काम की रिवायत से "बाब फी फज़ाइल अस्हाब रसूलुल्लाह ﷺ" में, और उनके इलावा दीगर ने नक़ल किया।

उमर ﷺ जन्नत में हैं

हदीस 2 : हज़रत सईद बिन ज़ैद से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र जन्नत में हैं, उमर जन्नत में हैं, उस्मान जन्नत में हैं, अली जन्नत में हैं, तलहा जन्नत में हैं, ज़ुबैर जन्नत में हैं, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ जन्नत में हैं, सअद बिन अबी वक़्क़ास जन्नत में हैं, सईद बिन ज़ैद जन्नत में हैं और उबैदह बिन जर्राह जन्नत में हैं।" (रदीअल्लाहु त'आला अनहुम अजमईन)।

इस हदीस को इमाम इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में हदीस नंबर: 7002 पर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ की रिवायत से (463/15), इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी सुनन में हदीस नंबर: 3748 पर "बाब फज़ाइल अल-अशरह" में, व दीगर ने नक़ल किया।

उमर ﷺ मुझ से यूँ हैं जिस तरह ....

हदीस 3 : हज़रत मुत्तलिब बिन अब्दुल्लाह बिन खत्ताब अपने वालिद और वो उनके दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र और उमर मुझ से यूँ हैं जिस तरह कान और आँख सर में (अहम) होते हैं।"

इस हदीस को इमाम इब्ने अब्दुल बर्र ने अल-इस्तीआब में (401/1) नक़ल किया।

इस हदीस को इमाम अबू यअला वग़ैरह ने तख़रीज किया है।

नोट: *इस हदीस में मज़कूरह अस्हाब को अशरह मुबश्शरह कहा जाता है।*

उमर رضي الله عنه का इस दीन में मरतबा

हदीस 4 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीअल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र और उमर इस दीन (इस्लाम) में इस मरतबा पर हैं जैसे सर में कान और आँख के।"

इस हदीस को खतीब बग़दादी ने अपनी तारीख में (259/8) नक़ल किया।

इस हदीस की इब्ने नज्जार ने तख़रीज की और खतीब बग़दादी ने इसे हज़रत जाबिर से तख़रीज किया।

उमर رضي الله عنه मेरी ज़बान से गोया होते हैं

हदीस 5 : हज़रत अनस से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र सिद्दीक मेरे वज़ीर हैं और मेरे बाद मेरी उम्मत पर मेरे खलीफा हैं, और उमर मेरी ज़बान से गोया होते हैं, और मैं उस्मान से हूँ और उस्मान मुझ से जैसे मैं आप से हूँ, ऐ अबू बक्र, आप मेरी उम्मत की शफाअत करेंगे।"

[इस हदीस को इब्ने अदी ने कामिल में हदीस नंबर: 16162 पर (83/6), दैलमी ने अल-फिरदौस बि-मअसूर अल-खिताब में हदीस नंबर: 1782 पर (1/437) और क़ज़वीनी ने तारीख़ क़ज़वीन (164/4) में, और उनके इलावा दीगर ने नक़ल किया।]

उमर رضي الله عنه मुझ से हैं जैसा कि ....

हदीस 6 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र और उमर मुझ से हैं जैसा कि मेरी आँखें मेरे सर में और उस्मान बिन अफ्फान मुझ से हैं जैसा कि मेरी ज़बान मेरे ज़हन में और अली बिन अबी तालिब मुझ से हैं जैसे मेरी रूह मेरे जिस्म में"

इसे इब्ने नज्जार ने तख़रीज किया।

उमर ﷺ मुझ से इस तरह हैं

हदीस 7 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीअल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र और उमर मुझ से इस तरह हैं कि जिस तरह हारून मूसा से।"

इस हदीस की तख़रीज ख़तीब बग़दादी ने अपनी तारीख़ में की।

उमर ﷺ आसमान व ज़मीन वालों में बेहतर हैं

हदीस 8 : हज़रत अबू हुरैरह से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अबू बक्र और उमर आसमान वालों और ज़मीन वालों में बेहतर हैं, और क़ियामत तक बाकी रहने वालों से भी बेहतर हैं।"

इस हदीस को दैलमी ने अल-फिरदौस बि-मअसूर अल-खिताब... पर (33) पर और खतीब बग़दादी ने अपनी तारीख़ में... नक़ल किया।

हक़ उमर ﷺ के साथ होगा

हदीस 9 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीअल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "उमर बिन खत्ताब जन्नतियों के चिराग है (अहले-बातिल के खिलाफ) हक़ उमर के साथ होगा जैसे भी हों।" इस हदीस को इमाम तबरानी ने अपनी मुअजम कबीर में रिवायत किया।

मैं उमर ﷺ से

हदीस 10 : हज़रत **अब्दुल्लाह बिन अब्बास अपने भाई फज़ल रदीअल्लाहु से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "तू मुझ से है और मैं उमर से और (अहले-बातिल के खिलाफ) हक़ उमर के साथ होगा जैसे भी हों।"**

इस हदीस को इब्ने अदी ने कामिल में (150/4) और ज़हबी ने मीज़ान अल-इतिदाल फी नक्द अर-रिजाल में (174/3) नक़ल किया।

इस हदीस को इमाम तबरानी ने अपनी मुअजम कबीर में रिवायत किया।

उमर ﷺ की ज़बान और दिल पर हक़ जारी

हदीस 11 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अल्लाह त'आला ने उमर की ज़बान और दिल पर हक़ जारी फरमा दिया है।"

इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी सुनन में हदीस नंबर: 3682 पर "बाब फी मनाकिब उमर बिन अल-खत्ताब" में (5/61), इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में हदीस नंबर: 1889 पर "ज़िक्र इस्बात अल्लाह जल्ल व अला अल-हक़ अला क़ल्ब उमर व लिसानिह" में (312/15), और इमाम इब्ने अबी शैबा ने अपनी मुसन्नफ में हदीस नंबर: 31986 पर (312/6) नक़ल किया।

हक़ ओ बातिल में इम्तियाज़

हदीस 12 : हज़रत अय्यूब बिन मूसा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अल्लाह त'आला ने उमर की ज़बान और दिल पर हक़ जारी फरमा दिया है और वह फारूक़ हैं। अल्लाह त'आला ने उनके ज़रिए हक़ ओ बातिल में इम्तियाज़ फरमा दिया।"

इस हदीस को इब्ने सअद ने अत-तबक़ात अल-कुबरा में (270/3) नक़ल किया।

हक़ जारी फरमा दिया

हदीस 13 : हज़रत बिलाल (रदीअल्लाहु अन्ह) से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "बेशक अल्लाह त'आला ने उमर के दिल और उनकी ज़बान पर हक़ जारी फरमा दिया।"

इस हदीस को अबू सईद शाशी ने मसनद अश-शाशी में (377/2) तख़रीज किया।

हज़रत उमर ﷺ जब इस्लाम लाए

हदीस 14 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हज़रत उमर जब इस्लाम "लाए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उनके सीने पर अपना

मुबारक हाथ मार कर तीन मर्तबा फ़रमाया: 'ऐ अल्लाह! उमर के सीने से कीना व बीमारी दूर फरमा और इसे ईमान से बदल दे।'"

सब से बेहतर अबू बक्र व उमर ﷺ हैं

हदीस 15 : हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "इस उम्मत के नबी के बाद सब से बेहतर अबू बक्र व उमर हैं।"

हदीस सहीह है। इसे इमाम हाकिम ने मुस्तदरक में हदीस नंबर: 1392 पर (1/3), सलाम तबरानी ने मुअजम औसत में हदीस नंबर: 0916 पर (20/2), और मरी ने तहज़ीब अल-कमाल में (3/31) नक़ल किया।

उम्मत में बेहतरीन अबू बक्र व उमर

हदीस 16 : हज़रत अली ही से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺने फ़रमाया, "मेरे बाद मेरी उम्मत में बेहतरीन अबू बक्र व उमर हैं।"

इस हदीस को इमाम अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने अपनी मुसन्नफ में (3/338), इमाम अहमद ने अपनी मसनद में हदीस नंबर: 136 पर (1/115), और इमाम तबरानी ने मुअजम औसट में हदीस नंबर: 992 पर (298/1) नक़ल किया।

सोने का महल

हदीस 17 : हज़रत अनस ﷺ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "मैं जन्नत में दाखिल हुआ तो वहां एक सोने का महल था। मैंने कहा, 'यह महल किस का है?' 'अर्ज़ की गई, 'कुरैश के एक जवान का।' मुझे गुमान हुआ कि वह मैं हूँ। मैंने कहा, 'वह कौन है?' 'अर्ज़ की गई, 'उमर बिन खत्ताब।' तो (ऐ उमर) अगर मुझे आप की ग़ैरत का इल्म न होता तो मैं इस महल में दाखिल हो जाता।" (एक रिवायत में है कि फिर हज़रत उमर ने अर्ज़ की, 'आप पर मेरे माँ बाप कुर्बान या रसूलुल्लाह! क्या मैं आप से ग़ैरत कर सकता हूँ?')"

इस हदीस को इमाम अबू जाफर तबरी ने हदीस नंबर 75 पर हज़रत अनस अलैहि अर-रिवाया से मर्फूअन नक़ल किया। हदीस सहीह (है)। इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने अपनी

सहीह में हदीस नंबर 70240 पर "किताब (92) ताबीर, बाब (36) अल-क़स्र फ़ी अल-मनाम" में, इमाम इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में हदीस नंबर 540 पर "ज़िक्र क़स्र उमर बिन अल-खत्ताब फ़ी अल-जन्नह" (250/1) में, और इमाम अहमद ने अपनी मसनद में हदीस नंबर: 2015 पर (107/3) नक़ल किया।

हज़रत उमर ﷺ का इस्लाम फैलाना

हदीस 18 : हज़रत सालिम अपने वालिद रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "मैंने ख्वाब में देखा कि मैं एक कुएँ से पानी निकाल रहा हूँ, फिर अबू बक्र आए उन्होंने एक या दो डोल निकाले जबकि उनके निकालने में कुछ ज़फ़ था। अल्लाह त'आला उनकी मग़फ़िरत फरमाए (यह दुआ-ए-मग़फ़िरत हज़रत सिद्दीक अकबर पर करम के इज़हार के लिए है जैसे कहा जाता है 'मेरा बेटा अल्लाह उसे बख्शे बहुत अच्छा है' - मिरात अज़ अशिआह)। फिर उसे उमर ने लिया तो वह उनके हाथ से चरसा (यानी बड़ा डोल) बन गया। डोल से चरसा बन जाने में इस तरफ इशारा है कि आप के ज़माने में इस्लामी सरहदें बहुत दूर तक पहुँचेंगी (बहवाला मिरात)। मैंने किसी पहलवान को नहीं देखा जो उमर की तरह खींचता हो (इस कुव्वत से पानी निकालने में इस तरफ इशारा है कि आप इतने बड़े मुल्कों को फ़तह फरमाकर उनका इंतिज़ाम संभाल भी लेंगे और बड़ी कुव्वत ओ शौकत से उनमें इस्लाम फैलाएंगे कि मशरिक़ ओ मग़रिब में आप की बरकत से इस्लाम फैल जाए गा - मिरात)। यहाँ तक कि लोगों ने बाड़ा इख़्तियार कर लिया (यानी, लोग खुद भी सेराब हो गए और उन्होंने अपने जानवरों को भी सेराब कर लिया। इस ताबीर में इशारा इस जानिब है कि इस सेराबी की इब्तिदा हज़रत सिद्दीक अकबर से होगी और तहमील हज़रत उमर फारूक पर - मिरात बहवाला मिरकात)।"

इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने अपनी सहीह में हदीस नंबर: 3184 पर "किताब (64) फज़ाइल अस्हाब अन-नबी, बाब (1) मनाकिब उमर बिन अल-खत्ताब" में और इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में हदीस नंबर: 19 (2393) पर "किताब (44) फज़ाइल अस-सहाबा रदीअल्लाहु त'आला अन्हुम, बाब (2) मिन फज़ाइल उमर रदीअल्लाहु त'आला अन्हु" में नक़ल किया।

खुलफा-ए-राशिदीन की तर्तीब की मुद्दत

हदीस 19 : हज़रत समुरह से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "मैंने देखा कि "गोया एक डोल आसमान से उतरा तो अबू बक्र आए और उन्होंने इस डोल के मुंह की लकड़ी पकड़ कर थोड़ा सा पिया। फिर उमर आए और उसे पकड़ कर पिया यहाँ तक कि सेराब हो गए। फिर उस्मान आए और इसके मुंह को पकड़ कर पिया यहाँ तक कि सेराब हो गए। फिर अली आए, डोल के मुंह को पकड़ा और खींचा तो उसकी राही खुल गई और डोल से उन पर छिड़काव हो गया।"

इस हदीस को इमाम अहमद ने अपनी मसनद में (21/5) और इमाम बुख़ारी ने तारीख़ कबीर में हदीस नंबर: 870 पर (269/5) और इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में हदीस नंबर: 1965 पर (231/7) नक़ल किया है।

हज़रत उमर رضي الله عنه का इल्मी मकाम

हदीस 20 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदीअल्लाहु अन्ह से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "मैंने ख्वाब में देखा कि मुझे दूध से भरा प्याला दिया गया तो मैंने उससे पिया यहाँ तक कि उसकी सेराबी मेरे गोश्त ओ जिल्द के दरमियान से जारी होने लगी। फिर मैंने बचा हुआ उमर बिन खत्ताब को दिया।" तो सहाबा किराम अलैहिम अर-रिज़वान ने उसकी तावील की और अर्ज़ की, "या नबी अल्लाह! यह इल्म है जो अल्लाह ने आपको अता फ़रमाया तो आप उससे सेराब हुए और अपना बचा हुआ उमर बिन खत्ताब को अता फ़रमाया।" तो नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, "आप लोगों ने सहीह जाना।" हदीस सहीह (है)।

इस हदीस को इमाम हाकिम ने मुस्तदरक में हदीस नंबर: 4496 पर (92/3), इमाम अहमद ने फ़ज़ाइल अस-सहाबा में हदीस नंबर: 319 पर (253/1) और इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में हदीस नंबर: 13155 पर (293/12) नक़ल किया।

उमर ﷺ उम्मत पर ग़ालिब रहे

हदीस 21 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदीअल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "मैंने फज्र से कुछ पहले (ख्वाब में) देखा कि गोया मुझे कुंजियाँ और तराजू दिए गए हैं, जहाँ तक कुंजियों का तअल्लुक़ है तो वह तो चाबियाँ ही हैं और तराज़ू, तो वह वही हैं जिस से वज़न किया जाता है। पस मुझे एक पलड़े में रखा गया और मेरी उम्मत को दूसरे पलड़े में तो मैं उन पर ग़ालिब रहा। फिर अबू बक्र को लाया गया और उनका वज़न किया गया, वह भी उन पर ग़ालिब रहे। फिर उमर को लाया गया, उन्हें तोला गया तो वह भी उन पर ग़ालिब रहे। फिर उस्मान को लाया गया, उन्हें भी मीज़ान के पलड़े में रखा गया तो वह भी मेरी उम्मत पर ग़ालिब रहे। फिर इस तराज़ू को उठा लिया गया।"

इस हदीस को इमाम अहमद ने अपनी मसनद में हदीस नंबर: 5469 पर (76/2), इमाम इब्ने अबी शैबा ने अपनी मुसन्नफ में हदीस नंबर: 31920 पर (352/6), और इमाम अब्द बिन हुमैद ने अपनी मसनद में हदीस नंबर: 850 पर (267/1) नक़ल किया।

अल्लाह त'आला उमर ﷺ की रिज़ा पर राज़ी

हदीस 22 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदीअल्लाहु अन्हु ही से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अल्लाह त'आला उमर की रिज़ा पर राज़ी हुआ और उमर अल्लाह त'आला की रिज़ा पर राज़ी हुए।" इस हदीस को इमाम हाकिम ने अपनी तारीख़ में तख़रीज किया।

उमर ﷺ के हक़ में दुआ कुबूल

हदीस 23 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने दुआ फरमाई, "ऐ अल्लाह! इस्लाम को उमर बिन खत्ताब या अबू जहल (अम्र) बिन हिशाम के ज़रीए मुअज़्ज़िज़ फरमा।" तो अल्लाह त'आला ने अपने रसूल (ﷺ) की दुआ उमर बिन खत्ताब (ﷺ) के हक़ में क़ुबूल फरमाई और उनके

ज़रीए इस्लाम की बुनियाद मज़बूत हुई और अदयान-ए-बातिला का क़लअ क़मअ (जड़ से उखाड़ देना) हुआ है।"

इस हदीस को इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में हदीस नंबर: 103140 पर (159/10) नक़ल किया और इसमें है कि "आप के ज़रीए इस्लाम की बुनियाद मज़बूत हुई और बुत मुन्हदिम हुए।"

उमर ﷺ के ज़रिए इस्लाम को शिद्दत ओ ग़लबा

हदीस 24 : हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने दुआ फरमाई, "ऐ अल्लाह! उमर बिन खत्ताब के ज़रिए इस्लाम को शिद्दत ओ ग़लबा अता फरमाए।"

इस हदीस को इमाम तबरानी ने मुअजम औसत में हदीस नंबर: 1453 पर (294/6) और बैहक़ी ने मजमा अज़-ज़वाइद में (13/9) नक़ल किया।

उमर ﷺ के ज़रिए इस्लाम को इज़्ज़त

हदीस 25 : हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने शब-ए-जुमा दुआ फरमाई, "ऐ अल्लाह! इस्लाम को उमर बिन खत्ताब या अम्र बिन हिशाम के ज़रिए इज़्ज़त अता फरमा।" पस हज़रत उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) सुबह उठे तो इस्लाम कुबूल कर लिया।

इस हदीस को इमाम तबरानी ने मुअजम औसत में हदीस नंबर: 1860 पर (240/2) नक़ल किया

उमर ﷺ की ज़बान और दिल पर हक़ जारी है

हदीस 26 : उम्मुल मोमिनीन सैय्यदा आयशा सिद्दीक़ा रदीअल्लाहु अन्हा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "कोई नबी ऐसा नहीं कि जिसकी उम्मत में एक या दो शख़्स ऐसे न हों जिन्हें इल्हाम होता हो और अगर मेरी

उम्मत में कोई ऐसा है तो वह उमर बिन खत्ताब हैं। बेशक उमर की ज़बान और दिल पर हक़ जारी है।"

इस हदीस को इमाम तबरानी ने मुअजम औसत में हदीस नंबर: 9137 पर (77/9), इब्ने सअद ने अत-तबक़ात अल-कुबरा में (335/2) और इब्ने अबी आसम ने अस-सुन्नह में हदीस नंबर: 1262 पर (583/2) नक़ल किया।

मेरे बाद कोई नबी होता तो वह उमर होते

हदीस 27 : हज़रत इस्मह से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो वह उमर होते। लिहाज़ा जब हज़रत उमर ही नहीं तो दूसरा कोई नुबूवत का"(दावा कैसे कर सकता है)।"

इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी सुनन में हदीस नंबर: 3686 पर हज़रत उकबा बिन आमिर की रिवायत से (119/5), इमाम हाकिम ने मुस्तदरक में हज़रत उकबा बिन आमिर से ही हदीस नंबर: 4495 पर नक़ल किया और फ़रमाया: "यह हदीस सहीह अल-इस्नाद है" (92/3)। उनके इलावा इमाम तबरानी ने यह हदीस मुअजम कबीर में इन्ही से हदीस नंबर: 822 पर (17/298) और बैहक़ी ने मजमा अज़-ज़वाइद में हज़रत इस्मह से की रिवायत से (18/9) नक़ल की।

अगर ......उमर رضي الله عنه को रसूल बना कर भेजता

हदीस 28 : हज़रत अबू सईद खुदरी से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "अगर अल्लाह त'आला मेरे बाद किसी को रसूल बना कर भेजता तो ज़रूर उमर को भेजता।"

इस हदीस को हयथमी ने तबरानी औसत के हवाले से मजमा अज़-ज़वाइद में (68/9) नक़ल किया।

उमर رضي الله عنه की रज़ा मंदी के मुताबिक़ अहकाम जारी होते हैं

हदीस 29 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीअल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "मेरे पास जिब्रील (अलैहिस-सलाम) हाज़िर

हुए, अर्ज़ की, 'उमर को सलाम कहिए और उनसे फरमाइए कि उनकी रिज़ा मंदी के मुताबिक़ अहकाम जारी होते हैं, और उनका ग़ज़ब अज़ीज़ है।'"

इस हदीस को इमाम इब्ने अबी शैबा ने मुसन्नफ में हज़रत सईद बिन जुबैर से की रिवायत से मर्फ़ूअन हदीस नंबर: 32019 पर (359/1) और इमाम तबरानी ने मुअजम औसत में हज़रत इब्ने अब्बास रावी अज़ हज़रत सईद बिन जुबैर रदीअल्लाहु अन्हुम की रिवायत हदीस नंबर: 6297 पर (242/6) नक़ल किया।

उमर ﵁ पर ख़ास तौर पर फ़ख़्र फ़रमाया

हदीस 30 : हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "बेशक अल्लाह त'आला शब-ए-अरफ़ा अपने फरिश्तों के हाँ अपने बन्दों पर (अपने शायान-ए-शान) आम तौर पर फ़ख़्र फ़रमाता है और उमर पर ख़ास तौर पर फ़ख़्र फ़रमाया।"

इस हदीस को इमाम तबरानी ने मुअजम औसत में हदीस नंबर: 6726 पर (18/7), इब्ने अबी आसम ने अस-सुन्नह में हदीस नंबर: 1273 पर (586/2) और इमाम इब्ने हजर अस्कलानी ने लिसान अल-मीज़ान में हदीस नंबर: 482 पर (51/7) नक़ल किया।

उमर ﵁ पर ख़ास तौर पर फ़ख़्र ओ मुबाहात

हदीस 31 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीअल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक रोज़ हज़रत उमर की जानिब देखा और मुस्कुराये, फ़रमाया: "ऐ इब्ने खत्ताब, क्या आप जानते हैं मैं आप की जानिब देख कर क्यों मुस्कुराया?" अर्ज़ की: "अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते हैं।" फ़रमाया: "बेशक अल्लाह त'आला ने अहल-ए-अरफ़ा पर (अपने शायान-ए-शान) फ़ख़्र ओ मुबाहात फ़रमाया और आप पर ख़ास तौर पर फ़ख़्र ओ मुबाहात (बढ़ाई और शान ज़ाहिर करना**) फ़रमाता है।"**

इस हदीस को इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में हदीस नंबर: 1430 पर (182/11) नक़ल किया।

शैतान उमर ﷠ के सामने मुंह के बल गिर पड़ा

हदीस 32 : उम्मुल मोमिनीन सैय्यदा हफ़्सा की बंदी (सुरैया) रदीअल्लाहु त'आला अन्हा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "बेशक जिस दिन से उमर इस्लाम लाए हैं उस दिन से शैतान उनके सामने जब भी आया, मुंह के बल गिर पड़ा।"

इस हदीस को इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में हदीस नंबर: 7740 पर (24/305) और दैलमी ने अल-फिरदौस बि-मअसूर अल-खिताब में हदीस नंबर: 3693 पर (380/2) नक़ल किया।

उमर ﷠ से ज़्यादा ताक़तवर पहलवान नहीं देखा

हदीस 33 : हज़रत अबुत-तुफ़ैल से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "एक रात (ख्वाब में) मैं कुएँ से पानी निकाल रहा था कि अचानक मेरे पास काले और मिटियाले रंग की बकरियाँ आईं, फिर अबू बक्र आए उन्होंने एक या दो डोल निकाले जबकि उनके निकालने में थकावट था - अल्लाह त'आला उनके कमजोरी को बख्शे - फिर उमर आए तो डोल बड़ा हो गया तो उन्होंने हौज़ भर दिए, और वादियाँ सेराब कर दीं, मैंने खींचने में उमर से ज़्यादा ताक़तवर पहलवान नहीं देखा। पस मैंने काली बकरी से अरब और मिटियाली अजम तावील किए"

इस हदीस को इमाम अहमद ने अपनी मसनद में हदीस नंबर: 2852 पर (355/5), इमाम तबरानी ने अर-रियाज़ अन-नज़रह में हदीस नंबर: 230 पर (350/1) और बैहक़ी ने मजमा अज़-ज़वाइद में तबरानी से नक़ल किया। और फ़रमाया: "और कहा इसे तबरानी ने रिवायत किया और इसकी असनाद हसन है" (72/9)।

इस हदीस को इमाम तबरानी ने बिसनद सहीह तख़रीज किया।

दुनिया व आख़िरत में आँखों की ठंडक

हदीस 34 : हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है फरमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत-ए-अक़दस में हाज़िर थे कि उमर बिन खत्ताब

हाज़िर हुए जबकि उन पर सफ़ेद कपड़े थी, तो उनसे रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ उमर! आपकी कपड़े नई है या धुली हुई है?" अर्ज़ की: "धुली हुई।" फ़रमाया: "जदीद पहनीए, महमूद (अल्लाह और उसके रसूल के नज़दीक पसंदीदा हो**) ज़िंदगी बसर कीजिए, और शहादत के दर्जे पर फाइज़ हों। अल्लाह त'आला आपको दुनिया व आख़िरत में आँखों की ठंडक अता फरमाए।"**

इस हदीस को बैहक़ी ने मजमा अज़-ज़वाइद में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अलैहि अर-रिवाया से बिहवाला... (74/9) और इमाम इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदीअल्लाहु अन्हुमा की रिवायत से नक़ल किया कि नबी करीम ﷺ ने हज़रत उमर बिन खत्ताब पर सफ़ेद कपड़ा देखा फ़रमाया: "आपकी क़मीस नई है या धुली हुई?" अर्ज़ की: "बल्कि नई है।" तो नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया: "नया पहनें, महमूद जिएँ और यूँही दुनिया से रुख़्सत हों।" और इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में हदीस नंबर: 13127 पर हज़रत सालिम की उनके वालिद रदीअल्लाहु अन्हा की रिवायत से नक़ल किया कि नबी करीम ﷺ ने हज़रत उमर पर सफ़ेद क़मीस देखी तो फ़रमाया: "आपकी क़मीस नई है या धुली हुई?" अर्ज़ की: "नहीं बल्कि धुली हुई।" तो नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया: "नया पहनें, महमूद ज़िंदगी बसर कीजिए और यूँही दुनिया से रुख़्सत हों। अल्लाह त'आला आपको दुनिया व आख़िरत में आँखों की ठंडक अता फरमाए।" तो हज़रत उमर ने अर्ज़ की: "आपको भी या रसूलुल्लाह!!" (283/12)।

इस हदीस को बैहक़ी ने तख़रीज किया।

उमर رضي الله عنه की मौजूदगी में कोई फ़ितना नहीं पहुँच सकता

हदीस 35 : हज़रत अबू ज़र्र से एक हदीस में मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत उमर को देखा और फ़रमाया: "जब तक तुम में यह (यानी उमर) मौजूद हैं, तुम्हें कोई फ़ितना नहीं पहुँच सकता।"

इस हदीस को इमाम तबरानी ने मुअजम औसत में हदीस नंबर: 2019 पर "बाब मिन अस्मिह अहमद" में नक़ल किया।

उमर ﷺ की ज़बान से फरिश्ते बोलते हैं

हदीस 36 : हज़रत अबू सईद खुदरी से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "जिसने उमर से बुग़्ज़ रखा तो उसने मुझसे बुग़्ज़ रखा, और जिसने उमर से महब्बत की उसने मुझसे महब्बत की। और बेशक अल्लाह त'आला ने शब-ए-अरफ़ा (अपने शायान-ए-शान) लोगों पर उमूमी फ़ख़्र ओ मुबाहात फ़रमाया और उमर पर ख़ास तौर पर फ़ख़्र ओ मुबाहात फ़रमाया। और बेशक उसने हर नबी को यूँ ही भेजा है कि उसकी उम्मत में कोई ऐसा शख़्स होता है जिसे इल्हाम होता है और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा है तो वह उमर हैं।" सहाबा ने अर्ज़ की: "या रसूलुल्लाह!! उन्हें कैसे इल्हाम होता है?" फ़रमाया: "उनकी ज़बान पर फरिश्ते बोलते हैं।"

इस हदीस को इमाम तबरानी ने मुअजम औसत में हदीस नंबर: 1726 पर (18/7) नक़ल किया।

उमर ﷺ बातिल को पसंद नहीं करते

हदीस 37 : हज़रत अस्वद बिन सरी से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत उमर के लिए फ़रमाया: "यह मर्द बातिल को पसंद नहीं करते।"

इस हदीस को इमाम अहमद ने फज़ाइल अस-सहाबा में हदीस नंबर: 334 पर (270/1), हयथमी ने तबरानी के हवाले से मजमा अज़-ज़वाइद में (118/8) और अबू नुऐम ने हिल्यत अल-औलिया में (46/1) नक़ल किया।

उमर ﷺ जब तक तुम्हारे दरमियान ज़िंदा हैं

हदीस 38 : हज़रत क़ुदामा बिन मज़ून से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत उमर की जानिब इशारा फरमा कर इरशाद फ़रमाया कि "यह फितनों का सद्दे-बाब करेंगे।" और फ़रमाया: "जब तक यह तुम्हारे दरमियान ज़िंदा हैं तुम्हारे और फितनों के दरमियान एक मज़बूत दरवाज़ा क़ाइम रहेगा।"

इस हदीस को इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में हदीस नंबर: 8321 पर (38/9) नक़ल किया।

तो मर जाना

हदीस 39 : हज़रत सहल बिन अबी हमथह से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब मैं विसाल फरमा जाऊँ और अबू बक्र, उमर और उस्मान भी विसाल कर जाएँ, तो अगर तुम्हारी इस्तातअत हो के मर जाओ, तो मर जाना।"

इस हदीस को इमाम तबरानी ने मुअजम औसत में हदीस नंबर: 1918 पर (83/7) नक़ल किया।

इस हदीस को अबू नुऐम वग़ैरह ने तख़रीज किया।

फ़ज़ाइल-ए-उमर رضي الله عنه और जिब्रील

हदीस 40 : हज़रत अम्मार बिन यासिर से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ अम्मार! मेरे पास अभी जिब्रील आए, तो मैंने कहा, 'ऐ जिब्रील, मुझे आसमान में उमर बिन खत्ताब के फ़ज़ाइल बयान कीजिए?' अर्ज़ की, 'ऐ मुहम्मद!! अगर मैं आप की ख़िदमत में उमर के फ़ज़ाइल हज़रत नूह (अलैहिस-सलाम) के (ज़ाहिरी तौर पर) अपनी क़ौम में रहने के अर्सा साढ़े नौ सौ बरस तक भी बयान करूँ (यानी इतने बरस तक भी मैं आप की ख़िदमत-ए-अक़दस में फ़ज़ाइल-ए-उमर बयान करूँ) तो भी मुकम्मल न कर पाऊँगा। बेशक उमर तो अबू बक्र की नेकियों में से एक नेकी हैं।" इस हदीस को इमाम अबू यअला और इमाम तबरानी ने कबीर और औसत में तख़रीज किया।

इस हदीस को इमाम अबू यअला ने अपनी मसनद में हदीस नंबर: 1603 पर (179/3) और बैहक़ी ने अबू यअला व तबरानी के हवाले से मजमा अज़-ज़वाइद में (28/9) नक़ल किया।

खातिमा

इमाम अहमद व बर उर्दू तबरानी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद की रिवायत से नक़ल किया कि आपने फ़रमाया: "हज़रत उमर को लोगों पर चार बातों में (ख़ुसूसी) फज़ीलत हासिल है:

यौम-ए-बद्र आपने क़ैदियों के क़त्ल का हुक्म दिया तो अल्लाह ﷺ ने आयत नाज़िल फरमाई: (तर्जुमा: "अगर अल्लाह पहले एक बात लिख न चुका होता तो ऐ मुसलमानो तुम ने जो काफ़िरों से बदले का माल ले लिया इस में तुम पर बड़ा अज़ाब आता" [अल-अनफ़ाल: 68/8])

दूसरी फज़ीलत पर्दा की राए के साथ कि आपने नबी करीम ﷺ की अज़वाज मुतह्हरात को पर्दा के बारे में कहा तो उम्मुल मोमिनीन सैय्यदा ज़ैनब रदीअल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: "ऐ इब्ने खत्ताब आप हम पर भी हुक्म सादिर करते हैं हालांकि वह्य हमारे घर नाज़िल होती है", तो अल्लाह त'आला ने आयत (हिजाब) नाज़िल फरमाई: (तर्जुमा: "और जब तुम उन से कोई बर्तने की कोई चीज़ माँगो तो पर्दे के बाहर से माँगो" [अल-अहज़ाब: 53/33])

नबी ए करीम ﷺ की आप के हक़ में दुआ: "ऐ अल्लाह उमर के ज़रिए इस्लाम की ताईद फरमा"

चौथी फज़ीलत आप की सिद्दीक़ अकबर की ख़िलाफ़त के बारे में राए और सब से पहले उन से बैअत करना है।"

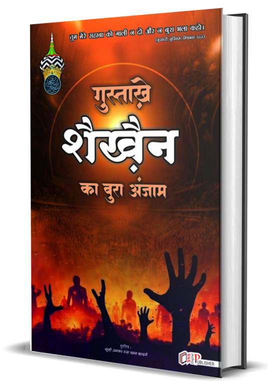
इस हदीस को इमाम तबरानी ने मुअजम कबीर में हदीस नंबर: 8820 पर (125/9) तख़रीज किया।

और इमाम तबरानी ने तख़रीज किया कि हज़रत तारिक़ बिन शहाब से मरवी है हज़रत उम्मे ऐमन ने हज़रत उमर की शहादत के दिन फ़रमाया: "आज के दिन इस्लाम कमज़ोर हो गया।" और इसी तरह हज़रत

अब्दुल्लाह बिन मसऊद की रिवायत से तख़रीज किया कि "उमर का इस्लाम फत्ह था, और आपकी हिजरत मदद और आपकी इमारत रहमत थी। अल्लाह की क़सम हमें इस वक़्त तक बैतुल्लाह के पास नमाज़ पढ़ने की इस्तातअत न हुई जब तक उमर इस्लाम न ले आए।" *इसे हाज़िम ने अपनी मसनद में हदीस नंबर: 1748 पर (156/5) नक़ल किया और बैहक़ी ने इमाम* और एक रिवायत में है कि "हमें इस्तातअत न हुई कि हम ज़ाहिरी तौर पर बैतुल्लाह (के मुंह करके) नमाज़ पढ़ें (जब तक कि उमर इस्लाम न लाए)।"

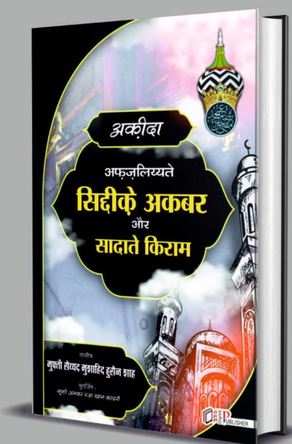
इस हदीस को इमाम हाकिम ने मुस्तदरक में हदीस नंबर: 4487 पर (10/3) तख़रीज किया और फ़रमाया: "यह हदीस सहीहुल-इसनाद है।" और इमाम अहमद ने इसे फज़ाइल अस-सहाबा में हदीस नंबर: 482 पर "बाब व मिन फज़ाइल उमर बिन अल-खत्ताब" में (335/1) नक़ल किया। और तबरानी ने मुअजम कबीर में हदीस नंबर: 8806 पर (162/9) और हाशिमी ने मजमा अज़-ज़वाइद में तबरानी के हवाले से (12/9 - 63) नक़ल किया।

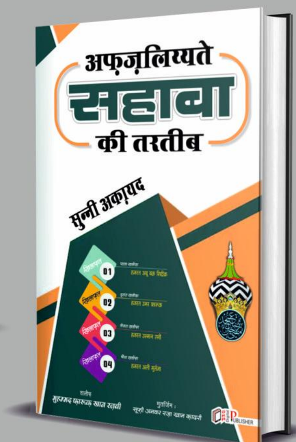
अहमद, बज़्ज़ार और तबरानी के हवाले से मजमा अज़-ज़वाइद में "बाब मा वरद मिन अल-फज़्ल मिन मुवाफ़क़तिह लिल-कुरआन व नह्व ज़ालिक" में (67/9) नक़ल किया।

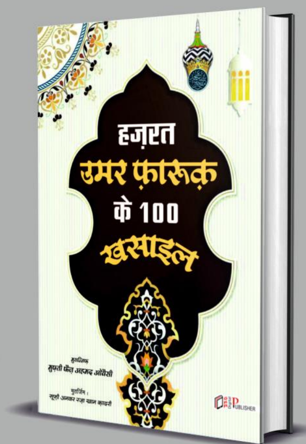


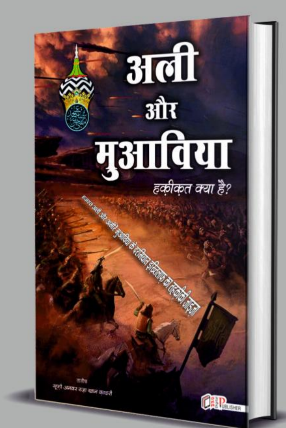
Related New कुतूब (2025)

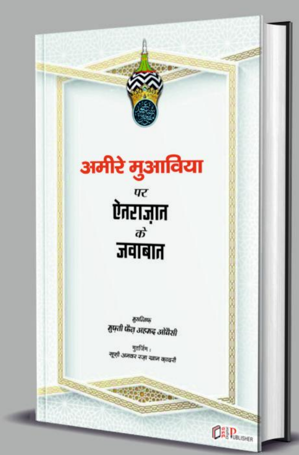
GKR Digital PUBLISHER













Comming Soon More New Books

www.ghausokhwajaorazatrust.com